दैनिक नर्मदापुरम् जिले का प्रथम दैनिक K ✌ K

RNI No.61546/95

क्षितिज ✌ किरण

त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे

नर्मदापुरम् संभाग सीहोर जिले एवं जबलपुर से एक साथ प्रकाशित एकमात्र समाचार-पत्र

प्रेरणापुंज -विचित्र कुमार सिन्हा | वर्ष-31 अंक-81 | नर्मदापुरम (होशंगाबाद) रविवार 04 मई 2025 | पृष्ठ-8 | मूल्य -1 रूपये | सम्पादक- कृष्णकान्त सक्सेना

कृषि आधारित उद्योगों के लिए सरल और अनुकूल हैं राज्य सरकार की नीतियां : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

3812 करोड़ की लागत की 11 औद्योगिक इकाइयों का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन

भोपाल(निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंदसौर जिले के सीतामऊ में आयोजित 'कृषि उद्योग समागम-2025' में खाद्य प्र-संस्करण उद्यमियों से संवाद कार्यक्रम में कहा कि खुशहाल कृषक और उन्नत कृषि मध्यप्रदेश की पहचान है। खाद्य प्र-संस्करण से जहां उद्योगों को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा, वहीं किसान भी आर्थिक रूप से समृद्ध होंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में संचालित राज्य सरकार का संकल्प भी यही है। कृषि आधारित उद्योगों के लिए हमारी सरकार सरल व अनुकूल नीतियों का निर्माण कर उद्यमियों को बढ़ावा दे रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज 3812 करोड़ की लागत की 11 औद्योगिक इकाइयों का लोकार्पण, भूमि-पूजन हुआ है। इससे स्थानीय स्तर पर 6850 रोजगार के अवसर सृजित होंगे। कृषि संबंधी उद्योगों की संभावनाओं पर निवेशकों से चर्चा की। साथ ही नीमच-मंदसौर जिले में नवीन उद्योग स्थापित करने वाले निवेशकों को आशय प्रमाण पत्र (लेटर ऑफ इन्टरेस्ट) भी प्रदान किए गये हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार के दरवाजे निवेशकों के लिए हमेशा खुले हैं। सरकार निवेशकों के मार्ग की सभी बाधाएं हटाने का काम कर रही है। हम सब प्रदेश की उन्नति के लिए संकल्पबद्ध हैं। सरकार हरसंभव सहयोग के लिए निवेशकों के साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भोपाल ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में 30 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में बिजली पानी एवं बेहतर सड़क की सुविधा के साथ ही औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन नीतियां उपलब्ध हैं। औद्योगिक निवेश के लिए प्रदेश में बेहतर वातावरण है। उन्होंने कहा कि प्रति बीघा गेहूं के उत्पादन में मध्यप्रदेश ने अमेरिका को भी पीछे छोड़ दिया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार रोजगार के अवसर बढ़ाने का हरसंभव प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि पहले इस तरह के आयोजन बड़े शहरों में ही होते थे, परंतु अब हमने संभाग एवं जिला स्तर पर भी इन्वेस्टर्स समिट आयोजित करने का निर्णय लिया है और इसकी शुरुआत आज मंदसौर जिले से हुई है। राज्य सरकार सभी प्रकार के निवेशकों को समान रूप से निवेश के अवसर उपलब्ध करा रही है। मुख्य सचिव अनुराग जैन ने कहा कि मध्यप्रदेश को रोजगारोन्मुखी बनाना मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की प्राथमिकता है। उनका मानना है कि इसके लिए उद्योगों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश की ग्रोथ रेट देश के बड़े राज्यों में सर्वाधिक है। जीडीपी में भी कृषि का योगदान 44 प्रतिशत है। प्रदेश में सिंचाई के रकबे में हुई वृद्धि से कृषि क्षेत्र में उत्पादन उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है।

कृषि एवं उद्यानिकी में नवाचार और उन्नत तकनीकों से बढ़ाएंगे उत्पादन क्षमता : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (ए.)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश आर्थिक रूप से सम्पन्न हो रहा है। नीति आयोग के अनुसार मध्यप्रदेश, देश में सबसे तेज गति से प्रगति करने वाला राज्य है। आने वाले समय में प्रगति की गति और तेज होने वाली है। राज्य सरकार कृषकों को बिजली में आत्मनिर्भर बनाने जा रही है। अब किसान सौर ऊर्जा से स्वयं बिजली बनाएंगे और पम्प चलाएंगे। उनके द्वारा अपनी आवश्यकता से अधिक बिजली पैदा करने पर राज्य सरकार किसानों से बिजली खरीदेगी और उसका भुगतान भी करेगी। किसानों को मात्र 10 प्रतिशत राशि पर सोलर पम्प उपलब्ध कराए जाएंगे। पांच, तीन, दो हार्स पॉवर तक के सौर पम्प के लिए मात्र 10 प्रतिशत राशि जमा कराने पर शेष राशि राज्य सरकार द्वारा किसानों को उपलब्ध कराई जाएगी। इस योजना से किसानों को बिजली के बिल से मुक्ति मिलेगी। तीन साल में 32 लाख सोलर पम्प उपलब्ध कराए जाएंगे। किसान, कृषि पम्प चलाने, घर में बिजली के उपयोग या अन्य प्रयोजनों के लिए अपनी बिजली स्वयं बना सकेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सीतामऊ (मंदसौर) में कृषि उद्योग समागम 2025 को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मंदसौर, नीमच क्षेत्र के किसानों द्वारा ली जा रही विविधतापूर्ण उपजों की सराहना करते हुए कहा कि राज्य सरकार द्वारा इसे प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही सीतामऊ में उन्नत कृषि पर केन्द्रित यह आयोजन किया गया।

नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक औपचारिक स्वागत समारोह के दौरान अंगोला के राष्ट्रपति जोआओ मैनुअल गोंकाल्वेस लौरेंको अपनी पत्नी के साथ, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ।

गोवा में धार्मिक यात्रा के दौरान मची भगदड़, सात लोगों की मौत ; 40 से अधिक घायल

पणजी ,(आरएनएस)। गोवा के शिरगांव में लैराई देवी मंदिर में भगदड़ मचने से सात लोगों की मौत हो गई और 40 से अधिक लोग घायल हो गए। सीएम प्रमोद सावंत अस्पताल पहुंचे और घायलों का हाल-चाल लिया। सीएम ने अफसोस जाहिर करते हुए बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनसे इस दर्दनाक हादसे को लेकर जानकारी ली।सीएम ने एक्स पोस्ट पर लिखा- आज सुबह शिरगांव के लैराई जात्रा में हुई दुखद भगदड़ से मैं बहुत दुखी हूं। मैं घायलों से मिलने अस्पताल गया और प्रभावित परिवारों को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। मैं व्यक्तिगत रूप से स्थिति की निगरानी कर रहा हूं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हर आवश्यक उपाय किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मुझसे बात की और स्थिति का विस्तृत जायजा लिया, इस कठिन समय में अपना पूरा समर्थन देने की पेशकश की। बता दें, यह घटना शनिवार तड़के हुई। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार घटना के पीछे भीड़भाड़ एक बड़ा कारण हो सकता है। गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने शनिवार को घायलों का हालचाल जानने के लिए अस्पताल का दौरा किया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, भीड़ के एक हिस्से के नियंत्रण खो देने के बाद स्थिति और बिगड़ गई। स्थानीय लोगों और मंदिर के स्वयंसेवकों ने लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए दौड़ लगाई।भगदड़ उस समय हुई जब हजारों की संख्या में श्रद्धालु मंदिर में सदियों पुरानी रस्म को देखने और उसमें भाग लेने के लिए उमड़े थे, जहां नंगे पैर 'धोंड' जलते अंगारों पर चलते हैं। श्री लैराई यात्रा हर साल उत्तरी गोवा में आयोजित की जाती है, जिसमें 50,000 से ज़्यादा श्रद्धालु आते हैं। भगदड़ तब हुई जब धार्मिक यात्रा के एक बिंदु पर ढलान के कारण भीड़ एक साथ तेजी से आगे बढ़ने लगी।रिपोर्ट के अनुसार, घायलों को नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। वहीं, उत्तरी गोवा के पुलिस अधीक्षक अक्षत कौशल ने कहा, श्रीगाओ में लैराई देवी मंदिर में हुई भगदड़ में सात लोगों की मौत हो गई और 40 से ज्यादा लोग घायल हो गए।

गैंगरेप केस में SC का बड़ा फैसला, 'एक ने दुष्कर्म किया, फिर भी सभी को मिलेगी सजा

नई दिल्ली, (आरएनएस)। सुप्रीम कोर्ट की विशेष पीठ ने गैंगरैप (धारा 376(2)(g) आईपीसी) के एक मामले में ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए स्पष्ट किया है कि यदि साझा इरादा सिद्ध हो जाए, तो केवल एक आरोपी द्वारा दुष्कर्म का कृत्य करने पर भी सभी शामिल व्यक्तियों को गैंगरैप के लिए दोषी ठहराया जा सकता है।यह टिप्पणी मध्य प्रदेश के 2004 के एक महिला किडनैपिंग एवं गैंगरैप मामले में की गई, जिसमें दो आरोपियों राजू व जलंधर कोल पर मुकदमा था। घटना 2004 जून में एक विवाह समारोह से लौट रही महिला का अपहरण कर, उसे विभिन्न स्थानों पर अवैध बंदी बनाकर गैंगरैप करने की थी। पीड़िता ने बताया कि आरोपियों ने साझा मंशा से यह अपराध किया। ट्रायल कोर्ट ने दोनों आरोपियों को गैंगरैप, अपहरण और अवैध बंदीकरण के आरोप में दोषी ठहराते हुए राजू को आजीवन कारावास, और जलंधर कोल को 10 वर्ष कैद की सजा सुनाई। हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट के फैसले को अपरिवर्तित रखा। इसके बाद राजू ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की।

जम्मू-कश्मीर, गुजरात और लद्दाख में लगे भूकंप के झटके, रिक्टर पैमाने पर मापी गई इतनी तीव्रता

नई दिल्ली (आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर, गुजरात और लद्दाख में शुक्रवार रात भूकंप के झटके महसूस किए गए। राहत की बात यह रही कि इस प्राकृतिक आपदा में किसी प्रकार की जनहानि या संपत्ति को नुकसान नहीं हुआ है।गुजरात में रात करीब 1:10 बजे रिक्टर पैमाने पर 3.4 तीव्रता का भूकंप दर्ज किया गया। वहीं जम्मू-कश्मीर में 2.7 तीव्रता और लेह-लद्दाख क्षेत्र में 3.9 तीव्रता के झटके महसूस किए गए। भूकंप के झटकों से लोगों में घबराहट फैल गई, लेकिन स्थिति सामान्य बनी रही।गुजरात राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (GSDMA) के अनुसार, यह इलाका भूकंप की दृष्टि से संवेदनशील माना जाता है। बीते 200 वर्षों में गुजरात में नौ बड़े भूकंप आ चुके हैं।

विवादों में घिरीं बरखा दत्त, पाबंदी के बावजूद श्रीनगर के लाल चौक में किया वीडियो शूट; लगे 'देशद्रोह' के आरोप

श्रीनगर (आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकी हमले, जिसमें 28 पर्यटकों की जान चली गई थी, के बाद जहां घाटी में हाई अलर्ट जारी है और भारत सरकार ने मीडिया संगठनों को सैन्य गतिविधियों की रिपोर्टिंग में अत्यधिक संयम बरतने की सलाह दी है, वहीं वरिष्ठ पत्रकार बरखा दत्त एक वीडियो शूट को लेकर विवादों में घिर गई हैं। श्रीनगर के लाल चौक जैसे संवेदनशील और भारी सैन्य उपस्थिति वाले क्षेत्र में उनकी वीडियो रिकॉर्डिंग ने ऑनलाइन जबरदस्त आक्रोश पैदा किया है और उन पर 'देशद्रोही' होने तक के गंभीर आरोप लगाए जा रहे हैं।

भारत सरकार द्वारा जारी सलाह का उद्देश्य पाकिस्तान के साथ बढ़े हुए तनाव के इस संवेदनशील समय में राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता करने वाले किसी भी अनजाने लीक को रोकना था।

मणिपुर हिंसा के दो साल होने पर राज्यभर में शटडाउन, सामान्य जीवन प्रभावित; मैतेई-कुकि समुदायों में फिर बढ़ा तनाव

इंफाल (आरएनएस)। मणिपुर में दो साल पहले शुरू हुई जातीय हिंसा की बरसी पर राज्यभर में आज बंद (शटडाउन) का व्यापक असर देखा जा रहा है। हिंसा की दूसरी वर्षगांठ पर मैतेई और कुकि समुदायों से जुड़े संगठनों ने अलग-अलग क्षेत्रों में बंद का आह्वान किया, जिससे सामान्य जनजीवन प्रभावित हुआ। इंफाल घाटी में मैतेई समुदाय के संगठन को-ऑर्डिनेटिंग कमिटी ऑन मणिपुर इंटीग्रिटी (COCOMI) ने शटडाउन का ऐलान किया है। दूसरी ओर, कुकि समुदाय के संगठन ज़ोमी स्टूडेंट्स फेडरेशन और कुकि स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन ने पहाड़ी इलाकों में बंद रखा है। इस दौरान बाजार, निजी कार्यालय, स्कूल-कॉलेज और सार्वजनिक परिवहन सेवाएं पूरी तरह से बंद हैं। केवल कुछ निजी वाहन ही सड़कों पर नजर आ रहे हैं। संवेदनशील हालात को देखते हुए राज्यभर में सुरक्षा व्यवस्था सख्त कर दी गई है।

इंफाल में COCOMI ने 'मणिपुर पीपल्स कन्वेंशन' आयोजित किया, जबकि शाम को हिंसा पीड़ितों को श्रद्धांजलि देने के लिए मोमबत्ती मार्च भी निकाला जाएगा।वहीं, कुकि बहुल इलाकों चुराचांदपुर और कांगपोकपी में 'डे ऑफ सेपरेशन' मनाया गया। यहां कुकियों ने अलग प्रशासनिक क्षेत्र की मांग को दोहराया। चुराचांदपुर में 'वॉल ऑफ रिमेम्ब्रेंस' पर और सेहकेन बुरियल साइट पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किए गए।

पाकिस्तानी झंडे वाले जहाजों की भारतीय बंदगाहों में 'नो एंट्री', मोदी सरकार का बड़ा फैसला

नई दिल्ली (आरएनएस)। पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय ने पाकिस्तानी झंडे वाले जहाजों के भारतीय बंदरगाहों में प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है। इसके साथ ही भारतीय झंडे वाले जहाजों के पाकिस्तान के बंदरगाहों पर जाने पर रोक लगा दी है। पहलगाम हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कई सख्त कदम उठाए नवीनतम आदेश इसी सिलसिले की एक कड़ी है।ये प्रतिबंध तत्काल प्रभाव से मर्चेंट शिपिंग अधिनियम, 1958 की धारा 411 के तहत भारतीय परिसंपत्तियों, कार्गो और बंदरगाह अवसंरचना की सुरक्षा के लिए लगाए गए हैं। मंत्रालय की तरफ से जारी आदेश में कहा गया, अधिनियम का उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए सर्वोत्तम तरीके से भारतीय व्यापारिक नौवहन के विकास को बढ़ावा देना और उसका कुशल रखरखाव सुनिश्चित करना है। सुरक्षा को मजबूत करने और भारत के समुद्री हितों के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के प्रयासों के तहत यह आदेश अगली सूचना तक लागू रहेगा।

पाकिस्तान ने एलओसी पर फिर किया सीजफायर का उल्लंघन, कुपवाड़ा, उड़ी और अखनूर में की फायरिंग

जम्मू (आरएनएस)। शनिवार को लगातार नौवें दिन, पाकिस्तान की सेना ने जम्मू-कश्मीर में एलओसी (नियंत्रण रेखा) पर भारतीय चौकियों पर बिना किसी उकसावे के गोलीबारी की। सैन्य सूत्रों ने बताया कि 2 और 3 मई की रात को पाकिस्तान की सेना ने कुपवाड़ा, उड़ी और अखनूर क्षेत्रों में छोटे हथियारों से फायरिंग की। भारतीय सेना ने तुरंत और उचित जवाब दिया।22 अप्रैल को पहलगाम के बैसरन में पाकिस्तान समर्थित लश्कर-ए-तैयबा आतंकियों ने 26 निर्दोष लोगों की हत्या कर दी थी, जिनमें 25 पर्यटक और एक स्थानीय शामिल थे। इस नृशंस हत्या के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव और बढ़ गया है।इस घटना से पूरे देश में गुस्सा फैल गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि इन आतंकियों, उनके मददगारों और समर्थकों को कहीं से भी ढूंढ कर सजा दी जाएगी। सोमवार को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने प्रधानमंत्री मोदी से 40 मिनट तक बैठक की। इससे पहले उन्होंने चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान से सेना की तैयारियों पर पूरी जानकारी ली थी। प्रधानमंत्री मोदी ने सेना को पूरी छूट दी है कि वे पहलगाम हमले का बदला लेने के लिए जरूरी कार्रवाई करें। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने भी श्रीनगर में थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी के साथ सुरक्षा की समीक्षा की। उन्होंने सेना से कहा कि आतंकियों के खिलाफ पूरी ताकत से कार्रवाई की जाए।

इसी बीच, आतंकियों और उनके समर्थकों को सख्त संदेश देने के लिए सुरक्षा बलों ने आतंकियों के मकानों को गिराना जारी रखा है। पिछले शुक्रवार को त्राल और बिजबेहड़ा इलाकों में दो आतंकियों आदिल हुसैन ठोकर और आसिफ शेख के घर गिराए गए। ये दोनों लश्कर-ए-तैयबा के सदस्य थे और पहलगाम हमले में शामिल थे। अब तक सुरक्षा बलों ने कश्मीर घाटी में सक्रिय 10 आतंकियों के घर गिरा दिए हैं।

सोमवार को जम्मू-कश्मीर विधानसभा ने भी सर्वसम्मति से इस जघन्य हमले की निंदा की और एक प्रस्ताव पारित किया। भारत ने अटारी-वाघा सीमा को बंद कर दिया है, पाकिस्तानी नागरिकों को देश से बाहर निकाल दिया है, सिंधु जल संधि को स्थगित कर दिया है और पाकिस्तानी उड़ानों के लिए अपना हवाई क्षेत्र बंद कर दिया है। इसके जवाब में पाकिस्तान ने कहा है कि वह अब शिमला समझौते को नहीं मानेगा और साथ ही उसने नियंत्रण रेखा की अनदेखी करने का भी निर्णय लिया है, जो जम्मू-कश्मीर में दोनों देशों के बीच वास्तविक सीमा मानी जाती है।

फिर 5 हजार करोड़ का कर्ज ले रही मोहन सरकार

भोपाल, (आरएनएस)। मध्य प्रदेश की मोहन सरकार वित्तीय वर्ष की समाप्ति यानी 31 मार्च 2025 की स्थिति में 4.21 लाख करोड़ रुपए से अधिक की कर्ज है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में सरकार मई के महीने में भारतीय रिजर्व बैंक से एक बार फिर कर्ज लेने वाली है। 6 मई को 12 साल के लिए ढाई हजार करोड़ रुपए का कर्ज लिया जाएगा। इसका इस्तेमाल विकास परियोजनाओं को गति देने के अलावा आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में होगा।

वित्त विभाग के अधिकारियों का कहना है कि, सरकार राज्य सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में तीन फीसदी कर्ज ले सकती है। आधा प्रतिशत कर्ज ऊर्जा और नगरीय विकास के क्षेत्र में आधारभूत सुधार करने पर लिया जा सकता है। वैसे अबतक जितना कर्ज लिया गया है, वो राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन अधिनियम के दायरे में रहा है। वित्त वर्ष की शुरुआत में कर्ज सामान्य तौर पर कम ब्याज दर पर मिलता है। यही कारण है कि, अधिकतर राज्य शुरुआती दौर में कर्ज लेते हैं।

दसवीं की छात्रा ने दोस्ती खत्म की तो युवक ने रास्ते में रोककर की मारपीट

भोपाल (आरएनएस)। ऐशबाग की रहने वाली दसवीं की छात्रा से छेड़छाड़ और मारपीट का मामला सामने आया है। छात्रा के दोस्त ने डरा धमकाकर उसके पर्सनल फोटो ले लिए थे। बाद में जब छात्रा ने उससे बात बंद कर दी तो उसने ये फोटो उसकी मां को भेज दिए।दो दिन पहले उसने छात्रा से मारपीट भी की। घटना की शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने छेड़खानी, पॉक्सो और मारपीट की धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।पुलिस ने बताया कि 15 वर्षीय किशोरी ऐशबाग थाना क्षेत्र में रहती है। दसवीं कक्षा की पढ़ाई कर रही है। जहांगीराबाद इलाके में रहने वाले अमन यादव से उसकी दोस्ती थी।

दोनों मोबाइल फोन पर बात किया करते थे। यह बात जब छात्रा के घर वालों को पता चली तो उन्होंने छात्रा को दोस्ती खत्म करने के लिए कहा। इसके बाद छात्रा ने युवक से बात करना बंद कर दी।

युवक ने छात्रा से मुलाकात कर बहला-फुसलाकर एक मोबाइल दे दिया। उसने कहा कि जब भी मैं फोन करूं तो इसी पर बात करना। छात्रा ने मोबाइल फोन ले लिया। कुछ दिन बाद ही युवक ने छात्रा से अपने न्यूड फोटो भेजने को कहा।छात्रा ने मना किया तो उसने धमकी दी कि मैं तुम्हारे घर वालों को बता दूंगा कि तुम मेरे दिए गए मोबाइल फोन से चोरी छिपे बात करती हो। धमकी से डरकर छात्रा अपने न्यूड फोटो भेज दिए। यही फोटो युवक ने बाद में छात्रा की मां को भेज दिए। इसके बाद छात्रा के परिवार के लोगों ने युवक को जमकर फटकार लगाई और बेटी से दूर रहने को कहा। 2 दिन पहले छात्रा जब खेलने के लिए मैदान पर जा रही थी तभी रास्ते में युवक मिल गया। वहां उसने छेड़खानी करते हुए मारपीट कर दी। पुलिस ने पॉक्सो, छेड़छाड़ और मारपीट का प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय जबलपुर का नाम शल्य चिकित्सा के जनक महर्षि सुश्रुत के नाम पर रखा जाएगा : राज्यपाल श्री पटेल

राज्यपाल की अध्यक्षता में मध्यप्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह संपन्न

भोपाल, (आरएनएस)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल कहा है कि मध्यप्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय का नाम शल्य चिकित्सा के जनक महर्षि सुश्रुत के नाम पर रखा जाएगा। राज्यपाल श्री पटेल ने यह बात विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कही। विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह नेताजी सुभाषचंद्र बोस सांस्कृतिक एवं सूचना केन्द्र जबलपुर में आयोजित किया गया था।राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि दीक्षांत समारोह का दिन विद्यार्थियों के लिए संस्थान में उनकी शिक्षा पूरी हो जाने के बाद जीवन के नए अध्याय की शुरुआत करने वाला मील का पत्थर होता है। मेडिकल शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जो विद्यार्थियों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाता है। उन्हें समाज के लिए कुछ करने का अवसर प्रदान करता है। चिकित्सकों का कार्य सिर्फ रोगों का इलाज करना नहीं है। उन्हें रोगी के अंदर बीमारी से लड़ने का आत्मविश्वास पैदा करना और जीवन की उम्मीद जगाने का काम भी करना है। उन्होंने छात्र-छात्राओं को भावी जीवन में प्रगति के लिए निरंतर सीखने की इच्छा बनाए रखने की नसीहत दी। उन्होंने कहा कि सीखने से ऊर्जा का निरंतर संचार होता है। व्यक्ति का सामर्थ्य भी विकसित होता है। राज्यपाल श्री पटेल ने संस्थान से आधुनिकतम तकनीकों को अपनाने के लिए सदैव तत्पर रहने

के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि आधुनिकतम तकनीकों को अपनाने से रोगियों के बेहतर इलाज के साथ चिकित्सकों की कार्य दक्षता में भी बढ़ोत्तरी होती है। उन्होंने कहा कि भारत को विकसित देश बनाने के लिए समाज के वंचित वर्ग को आगे लाने की आवश्यकता है। इसके लिये उनमें आकांक्षाएं जगाने की जरूरत है ताकि वे भी देश के विकास में हिस्सेदार बन सकें। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि युवाओं को अपने खान-पान का ध्यान रखना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी युवाओं से ज्यादा पानी पीने, व्यायाम करने एवं पूरी नींद लेने की बात कही है। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि चिकित्सकों को पहले रोगियों के रोग को समझना चाहिए। रोगियों की बातों को सुनना चाहिए। चिकित्सकों द्वारा रोगियों की बातों को अच्छी तरह सुनने से रोगियों का आधा दर्द दूर हो जाता है। उन्होंने कहा कि समाज में चिकित्सकों का स्थान भगवान के समान है। भारत को विकसित देश बनाने में चिकित्सकों की भूमिका अहम है। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहां कि भारत विश्वगुरु के रूप में स्थापित होने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। विकसित भारत का फल लोगों को तभी मिलेगा जब वे निरोगी होंगे। लोगों को निरोगी करने के लिए चिकित्सकों की महती आवश्यकता है। प्रदेश को मेडिकल का हब बनाने की दिशा में निरंतर कार्य किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने एमबीबीएस की 75 हजार सीटे बढ़ाने का संकल्प लिया है। मध्यप्रदेश में शासकीय और निजी संस्थानों को मिलाकर एमबीबीएस की 5 हजार और स्नातकोत्तर की ढाई हजार सीटे हैं। राज्य सरकार ने इन्हें बढ़ाकर क्रमशः 10 हजार एवं 5 हजार करने का संकल्प लिया है। उन्होंने 230 बेड के जिला चिकित्सालयों को स्नातकोत्तर संस्थानों के रूप में विकसित कर फैकल्टी की आपूर्ति की जा रही है।

स्वास्थ्य अधोसंरचना विकास कार्यों को समय सीमा में करें पूर्ण : राज्य मंत्री श्री पटेल

भोपाल (आरएनएस)। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने ग्वालियर में फूड एण्ड ड्रग टेस्टिंग लैब सहित स्वास्थ्य अधोसंरचना विकास कार्यों का निरीक्षण किया और निर्माण कार्य को शीघ्रता से पूर्ण करने के निर्देश दिए। राज्य मंत्री श्री पटेल ने हाउसिंग बोर्ड के सिविल इंजीनियरों एवं इलेक्ट्रिकल इंजीनियरों को निर्देशित किया कि वे निर्माण कार्य में तेजी लाएं और तय समय-सीमा में कार्य पूरा करें। उन्होंने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सचिन श्रीवास्तव को कार्य की नियमित निगरानी करने तथा इसे प्राथमिकता से पूर्ण कराने के निर्देश दिए। बैठक में स्वास्थ्य विभाग से मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सचिन श्रीवास्तव, डीएचओ-2 डॉ. प्रबल प्रताप सिंह, ड्रग इंस्पेक्टर कु. अनुभूति शर्मा, फूड ऑफिसर लोकेन्द्र सिंह, एम.पी. हाउसिंग बोर्ड से ई.ई. दास गुप्ता, श्रीमती नीरू राजपूत, बसंत यादव, एसडीओ रतन काकवानी, शुभम गुप्ता तथा भोपाल से फूड एण्ड ड्रग टेस्टिंग लैब के प्रभारी राकेश जैन भी मौजूद रहे।

एमपी ट्रांसको रतलाम में हुआ निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

भोपाल (आरएनएस)। मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) के तत्वावधान में काकानी सोशल वेलफेयर फाउंडेशन एवं जिला रोगी कल्याण समिति रतलाम के सहयोग से रतलाम में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर एवं कार्डियोपल्मोनरी पुनर्जीवन तकनीक (सीपीआर) का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। शिविर के दौरान डॉ. राजेश मैडा एवं डॉ. शीतल पाटीदार के निर्देशन में चिकित्सा विभाग की टीम द्वारा सीपीआर सहित विभिन्न जीवन रक्षक तकनीकों का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही एमपी ट्रांसको के कर्मचारियों की मधुमेह, रक्तचाप, दंत परीक्षण आदि की जांच की गई तथा आवश्यक परामर्श भी दिया गया। गर्मी के मौसम में लू, सड़क दुर्घटनाओं एवं विद्युत से संबंधित दुर्घटनाओं से बचाव के लिये जन-जागरूकता भी इस शिविर का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था।

रनिंग ट्रेनों में सफर के दौरान सोने-चॉदी के जेवरात चोरी

भोपाल (ए.)। राजधानी से गुजरने वाली अलग-अलग रनिंग ट्रैनो में सफर कर रहे लोगो को अज्ञात बदमाशो ने निशाना बनाकर उनके पास मौजूद बैग की चेन खोलकर सोने-चांदी के जेवरात पर हाथ साफ कर दिया। जीआरपी से मिली जानकारी के अनुसार विजयवाड़ा आंध्रा प्रदेश के रहने वाले मक्काना वेणु बाबू पिता एम. कोटेश्वर राव (40) ने अपनी शिकायत में बताया की वे उज्जैन जाने के लिए ट्रेन 22646 के एस-5 कोच में परिवार सहित सफर कर रहे थे। भोपाल रेलवे स्टेशन पहुंचने पर उन्हें जानकारी लगी की उनके साथ मौजूद एक महिला रिश्तेदार का हैंड बैग चोरी हो गया है। चोरी गये बैग में करीब 70 हजार का माल रखा था। वहीं फरियादी रवि कुमार कुशवाहा पिता जगदीश कुमार कुशवाहा ने भोपाल जीआरपी में प्रकरण दर्ज कराते हुए बताया की वे उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के रहने वाले हैं। वह अपनी पत्नि सरिता कुशवाहा के साथ पातालकोट के जनरल डिब्बे में सफर कर रहे थे।

हमीदिया अस्पताल में डॉक्टरों ने किया जोरदार प्रदर्शन, डॉ. अरुणा कुमार को हटाने की मांग

भोपाल,(आरएनएस)। चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा डॉ. अरुणा कुमार को डायरेक्टर मेडिकल एजुकेशन नियुक्त किए जाने के खिलाफ प्रदेशभर में जूनियर डॉक्टर्स और मेडिकल टीचर्स में आक्रोश है। शनिवार दोपहर 12 बजे राजधानी भोपाल के हमीदिया अस्पताल परिसर स्थित नई ब्लॉक 1 और 2 के बाहर बड़ी संख्या में डॉक्टरों ने विरोध प्रदर्शन किया। गांधी मेडिकल कॉलेज से जुड़े जूनियर डॉक्टर्स, मेडिकल टीचर्स एसोसिएशन (एमटीए) और सीनियर फैकल्टी सदस्यों ने हाथों में पोस्टर और बैनर लिए जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों की मांग थी कि डॉ. अरुणा कुमार की नियुक्ति तुरंत रद्द की जाए और इस पद पर निष्पक्ष व विवादमुक्त छवि के व्यक्ति को नियुक्त किया जाए। प्रदर्शन की घोषणा शुक्रवार रात को ही कर दी गई थी, जब एमटीए और जूडा (जूनियर डॉक्टर्स एसोसिएशन) के प्रतिनिधियों ने प्रदेश के उपमुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल से मुलाकात कर अपनी आपत्तियां दर्ज कराई थीं। जूडा ने आरोप लगाया कि डॉ. अरुणा कुमार के पूर्व प्रशासनिक कार्यकाल में एक महिला जूनियर डॉक्टर ने मानसिक प्रताड़ना के चलते आत्महत्या जैसा कदम उठाया था। इसके अतिरिक्त, उनके व्यवहार के चलते कॉलेज परिसर में कई बार तनावपूर्ण स्थिति बनी। वरिष्ठ महिला चिकित्सकों ने तो एक समय सामूहिक इस्तीफे की चेतावनी तक दे दी थी।

जूडा अध्यक्ष डॉ. कुलदीप गुप्ता ने कहा, हमारा विरोध व्यक्तिगत नहीं है, बल्कि उनकी कार्यशैली और कार्यकाल के दौरान उत्पन्न विवादों को लेकर है। हम नहीं चाहते कि प्रदेश की चिकित्सा शिक्षा व्यवस्था के शीर्ष पद पर कोई विवादित व्यक्ति बैठे। उन्होंने आगे कहा कि प्रदेश में कई योग्य और स्वच्छ छवि वाले वरिष्ठ चिकित्सक हैं, जो इस पद के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

डॉ. अरुणा कुमार की नियुक्ति के खिलाफ जबलपुर के जूनियर डॉक्टर एसोसिएशन, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन - जूनियर डॉक्टर नेटवर्क मध्यप्रदेश और एमजीएम मेडिकल कॉलेज इंदौर की जूडा इकाई ने भी खुलकर आपत्ति जताई है। हमीदिया अस्पताल में हुए इस प्रदर्शन में बड़ी संख्या में जूनियर डॉक्टर्स, मेडिकल टीचर्स एसोसिएशन के सदस्य और अन्य चिकित्सक शामिल हुए। एमटीए की ओर से डॉक्टर राकेश मालवीय ने नेतृत्व किया। प्रदर्शन शांतिपूर्ण रहा, लेकिन संदेश साफ था, चिकित्सा शिक्षा जैसे संवेदनशील विभाग में ऐसा व्यक्ति नहीं चलेगा, जिस पर गंभीर आरोप और विवाद हों।

टीआईटी कॉलेज छात्राओ से गैंग रेप, ब्लैकमेलिंग मामला

भोपाल(ए)। भोपाल में टीआईटी कॉलेज छात्राओं से रेप कर उनके वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करने के मामले में अशोका गार्डन पुलिस ने दो और पीड़िताओ की जानकारी जुटा ली है। पुलिस सूत्रो के अनुसार दोनो महिलाओ तक पुलिस फरहान के मोबाइल कॉल डिटेल के जरिए पहुंची। पता चला की वह दोनो शादीशुदा है, इन दोनो को आरोपी फरहान ने अपना शिकार बनाया था। लेकिन वह सामाजिक बदनामी के कारण सामने नहीं आना चाहती है। सूत्रो की मानी जाये तो दोनो महिलाओ ने पुलिस को बतायसा की वह साल 2022 से उसके संपर्क में थी। दोनों युवतियों की पढ़ाई पूरी हो चुकी है, और दोनों अब शादीशुदा हैं। एक युवती का बच्चा भी है। हालांकि पुलिस ने तीन दिनों तक महिलाओ को आरोपियो के खिलाफ मामला दर्ज कराने पर हर तरह की मदद और साथ देने की बात कही लेकिन वह सामने आने को तैयार नहीं हुई। हालांकि उन्होंने आरोपियों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी है, जिसकी पुलिस जांच कर रही है। गौरतलब है कि फरहान द्वारा सात युवतियों से दुष्कर्म किये जाने की जानकारी सामने आई है। इनमें से पांच सामने आ चुकी हैं।

हिंदू छात्राओं से दुष्कर्म के आरोपी फरहान का शॉर्ट एनकाउंटर

भोपाल, (आरएनएस)। हिंदू छात्राओं से गैंगरेप और ब्लैकमेलिंग के मामले में मुख्य आरोपी फरहान का शुक्रवार देर रात शॉर्ट एनकाउंटर हुआ है। दरअसल, इस मामले की मुख्य आरोपी फरहान पुलिस कस्टडी से फरार होने की कोशिश कर रहा था। इस दौरान पुलिस ने फरहान पर फायर किया। गोली फरहान के पैर में लगी। फिलहाल, पुलिस ने घायल अवस्था में आरोपी को शहर के हमीदिया अस्पताल में भर्ती करा दिया है, जहां उसका इलाज जारी है। अस्पताल में भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। फरहान पर अब हत्या के प्रयास का केस भी दर्ज किया गया है।बता दें, शुक्रवार को भोपाल की अशोका गार्डन थाना पुलिस को फरहान की रिमांड मिली है। रिमांड के दौरान पुलिसकर्मी उसे थाने से उसकी निशानदेही पर एक अन्य आरोपी की तस्दीक के लिए ले जा रहे थे। इसी दौरान फरहान ने पुलिसकर्मी की पिस्टल छीनने का प्रयास किया।अशोका गार्डन थाना प्रभारी हेमंत श्रीवास्तव के मुताबिक आरोपी फरहान ने पुलिस को गुमराह करने के लिए बताया था कि मामले में एक और फरार आरोपी अबरार बिलकिसगंज जिला सीहोर में छिपा है। इसके बाद सब इंस्पेक्टर विजय बामने के साथ कुल पांच पुलिसकर्मी फरहान के साथ वाहन में सवार होकर तस्दीक के लिए रवाना हुए थे।इसी बीच रातीबड़ थाना क्षेत्र में आने वाले सरवर गांव के पास आरोपी फरहान ने पेशाब करने का कहकर वाहन रुकवाया। वाहन के रुकने पर फरहान के साथ एसआई भी नीचे उतरे। तभी फरहान ने सब इंस्पेक्टर की सर्विस रिवॉल्वर को छीनने का प्रयास किया। छीना झपटी में गोली चली और आरोपी के पांव में लग गई।

पैर पर क्यों गोली मारी, छाती पर मारनी थी-मंत्री विश्वास सारंग

भोपाल(आरएनएस)। मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री विश्वास सारंग ने हिंदू लड़कियों से दुष्कर्म और ब्लैकमेलिंग के मामले में मुख्य आरोपी फरहान खान के पैर में गोली लगने पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि ऐसे अपराधियों को पैर पर नहीं, छाती पर गोली मारनी चाहिए थी। लव जिहाद प्रदेश में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ऐसे आरोपियों को सरे राह गोली मारिए। सारंग ने कहा कि जो लोग लव जिहाद करते हैं, हिंदू बहन बेटियों को गुमराह कर धर्मांतरण करवाते हैं, उन्हें प्रदेश में या देश में रहने का हक नहीं। वे धरती पर बोझ हैं। सारंग ने कहा कि पुलिस को आरोपियों को सरेराह गोली मार देनी चाहिए थी, ताकि यह संदेश दिया जा सके कि इस तरह का कृत्य यानी लव जिहाद करने वाले को बख्शा नहीं जाएगा। उन्हें खत्म कर दिया जाएगा।

महिलाओ के साथ मासूम बच्चियो को ले जा रहा ई-रिक्शा नाले में पलटा, बड़ा हादसा टला

भोपाल(ए)। शहर के ऐशबाग इलाके में सवारियों से भरा एक ई-रिक्शा बेकाबू होकर नाले में पलट गया। घटना में डेढ़ साल की मासूम बच्ची समेत आधा दर्जन महिलएं घायल हो गई हैं। मामले में पुलिस ने ई-रिक्शा को नाले से निकालकर जब्त करते हुए चालक के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया है। थाना पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार अशोका गार्डन थाना क्षेत्र स्थित बी-सेक्टर में रहने वाली रानी जैन पति अमित जैन (32) ने शिकायत करते हुए बताया की बीती 27 अप्रैल को वह श्वेता जैन, मीनल जैन, मोनिका जैन, स्वाति जैन, आकांक्ष जैन और उसकी डेढ़ साल की बेटी के साथ अभिरुचि परिसर के पास एक कैफे में पार्टी में आई थी। वहां से लौटने के लिए यह सभी लोग ई-रिक्शा में सवार हुए। रिक्शा अभिरुचि परिसर स्थित सर्विस रोड से प्रभात चौराहे पर स्थित मैन रोड पर आने लगा। इसी बीच रात लगभग साढ़े सात बजे नाले के पास से निकलते समय अधिक रफ्तार होने के कारण रिक्शा एक और झुका और फिर करीब 15 फिट गहरे नाले में पलट गया। घटना के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई आसपास के लोगो ने तुरंत ही मदद करते हुए सभी को नाले से बाहर निकालते हुए पुलिस को सूचना दी। हादसे में मोनिका जैन और स्वाति जैन को सिर में चोट लगी है। दोनों घायलों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना मिलने पर पुलिस अस्पताल पहुंची थी, लेकिन डाक्टर ने उस समय कहा की घायलो की हालत देखते हुए कहा था की अभी उनके बयान दर्ज नहीं किये जा सकते। इसके बाद अगले दिन पुलिस ने बयान दर्ज कर रिक्शा चालक के खिलाफ मामला कायम कर लिया।

स्पेन की तरह ही मध्यप्रदेश बनेगा फिल्म निर्माताओं की पहली पसंद : निर्माता एकता कपूर

फिल्म का प्री और पोस्ट प्रोडक्शन भी एमपी में ही पूरा करें -अपर मुख्य सचिव श्री दुबे मुंबई को रन फॉर मनी देने के लिए मध्यप्रदेश तैयार- प्रमुख सचिव श्री शुक्ला

भोपाल (ए.)। वर्ल्ड ऑडियो विजुअल एंड एंटरटेनमेंट समिट (WAVES) 2025 में शनिवार को मध्यप्रदेश के लिए ऐतिहासिक क्षण रहा। मुंबई के नीता मुकेश अंबानी सांस्कृतिक केंद्र (NMACC) में डिजिटल सपनों और सिनेमाई दृष्टिकोण के साथ मध्यप्रदेश—अगला रचनात्मक केंद्र विषय पर एक प्रभावशाली पैनल डिस्कशन आयोजित हुआ। इस सत्र ने देश के क्रिएटिव और डिजिटल उद्योग से जुड़े शीर्ष विशेषज्ञों को एक मंच पर लाकर मध्यप्रदेश को एवीजीसी-एक्सआर (एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग, कॉमिक्स और एक्सटेंडेड रियलिटी) का राष्ट्रीय हब बनाने की दिशा में विचार-विमर्श को मजबूती प्रदान की। इस चर्चा में मध्यप्रदेश के अपर मुख्य सचिव आईटी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संजय दुबे, प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड शिव शेखर शुक्ला, प्रसिद्ध फिल्म निर्माता और निर्देशिका सुश्री एकता कपूर, फिक्की एवीजीसी फोरम व एमसीसीआईए एनिमेशन एंड गेमिंग कमेटी के चेयरमैन आशीष एस. कुलकर्णी, अगस्त मीडिया ग्रुप के फाउंडर एवं सीईओ ज्योर्तिमय सहा और क्रिएटिव लैंड स्टूडियोज़ की सीईओ सुश्री शोभा सेंट शामिल रहे। इस सत्र का संचालन सुप्रसिद्ध लेखक और पत्रकार नमन रामचंद्रन ने किया। प्रसिद्ध अभिनेता अमित सियाल और शरद केलकर के साथ सभी विशेषज्ञों ने मध्यप्रदेश फिल्म पर्यटन नीति 2025 और मध्यप्रदेश एनिमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग, कॉमिक्स और एक्सटेंडेड रियलिटी VGC-XR नीति 2025 को रिलॉन्च किया। साथ ही प्रदेश के फिल्म फैसिलिटेशन पोर्टल के सेकंड फेस को लॉन्च किया। सत्र के दौरान अपर मुख्य सचिव आईटी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संजय दुबे ने कहा कि फिल्म

निर्माण के दौरान फिल्म शूटिंग के अलावा उसका प्री प्रोडक्शन और पोस्ट प्रोडक्शन भी महत्वपूर्ण कार्य होता है। इसी को ध्यान में रखकर मध्यप्रदेश की AVGC-XR नीति 2025 का निर्माण किया गया है। फिल्म पर्यटन नीति और U AVGC-XR नीति में से किसी भी एक नीति में अप्लाई कर दोनों नीतियां का लाभ लिया जा सकता है। इसलिए अब फिल्म निर्माता फिल्म शूटिंग के अलावा उसका प्री प्रोडक्शन और पोस्ट प्रोडक्शन का कार्य भी एमपी में ही कर सकते हैं। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता और निर्देशिका सुश्री एकता कपूर ने कहा कि फिल्म निर्माण के लिए मुख्य रूप से वित्तीय सहायता, छूट, सिंगल विंडो क्लियरेंस सिस्टम, मनभावन लोकेशन और ईज ऑफ शूट को ध्यान में रखा जाता है। इन सभी चीजों के साथ मध्यप्रदेश में समृद्ध संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत आज भी अपने मूल रूप में है। स्पेन ने अपनी पॉलिसी के द्वारा अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय फिल्म निर्माताओं को आकर्षित किया है। निश्चित है स्पेन की तरह ही मध्यप्रदेश भी फिल्म निर्माताओं की पहली पसंद बनेगा। प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि फिल्म निर्माताओं के लिए मनभावन शूटिंग स्थलों के साथ, शूटिंग फ्रेंडली स्थानीय नागरिक, फिल्म सहयोगी ईको सिस्टम, समृद्ध स्थानीय संस्कृति के साथ मध्यप्रदेश विशेष रूप से ईज ऑफ शूटिंग डेस्टिनेशन बन गया है। फिल्म टूरिज्म पॉलिसी की विशेषताओं को बताते हुए प्रमुख सचिव श्री शुक्ला ने कहा कि प्रदेश में फिल्म और वेब सीरीज की श्रृंखला को शूट करने पर इन्क्रीमेंटल इनसेंटिव्स का प्रावधान है। पहली बार शूट करने पर अधिकतम 1.5 करोड़ रुपये, दूसरी बार शूट करने पर 1.75 करोड़ रुपये और इसी तरफ तीसरी बार शूट करने पर 2 करोड़ रुपये तक की सहायता दी जाती है। इसके साथ ही स्थानीय भाषा में फिल्म बनाने और स्थानीय कलाकारों को काम देने पर अतिरिक्त सहायता राशि प्रदान की जाती है। अपनी विशेष सहायता राशि, सिंगल विंडो फिल्म शूटिंग अनुमति, स्थानीय टैलेंट के साथ मध्यप्रदेश अब शूटिंग के हब मुंबई को रन फॉर मनी देने के लिए तैयार है। फिक्की एवीजीसी फोरम व एमसीसीआईए एनिमेशन एंड गेमिंग कमेटी के चेयरमैन आशीष एस. कुलकर्णी, ने कहा कि देश में मेट्रो सिटी की तुलना में मध्यप्रदेश के भोपाल और इंदौर में अधोसंरचना निर्माण, सर्विस और आर्टिस्ट कॉस्ट बहुत कम है। इसका फायदा मध्यप्रदेश में फिल्म और U AVGC क्षेत्र को मिलेगा। क्रिएटिव लैंड स्टूडियोज़ की सीईओ सुश्री शोभा सेंट ने कहा कि मध्यप्रदेश देश का एकमात्र प्रदेश है, जहां मल्टीपल सीन और विजुअल है। आज तक किसी फिल्म मेकर से प्रदेश में शूटिंग संबंधी कोई शिकायत नहीं मिली है। जो एक बार मध्यप्रदेश से शूट कर के गया वो दबारा मध्यप्रदेश ही आया है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने पाटन में सिविल अस्पताल और नुनसर में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का किया लोकार्पण

विधायक अजय विश्नोई को दिया पाटन क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार का श्रेय

जबलपुर (आरएनएस)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने शनिवार को अपने प्रवास के दौरान स्वास्थ्य के क्षेत्र में जबलपुर जिले को दो बड़ी सौगात दीं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने जहाँ पाटन में करीब 12 करोड़ की लागत से बने सौ बिस्तरों के सिविल अस्पताल भवन का शुभारंभ किया, वहीं नुनसर में लगभग 2 करोड़ 90 लाख रुपये से निर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भवन को आम जनता को समर्पित किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने ग्रामीणों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में हेल्थ इंफ्राट्रक्चर के विस्तार के लिये नए स्वास्थ्य केंद्र खोले जा रहे हैं तथा मौजूदा स्वास्थ्य केंद्रों का उन्नयन किया जा रहा है। दवाइयाँ एवं सभी जरूरी पैथालॉजी जांच

एवं चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है तथा डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टॉफ की नियुक्ति की जा रही है।

उप मुख्यमंत्री ने पाटन, कटंगी और मझौली क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार का पूरा श्रेय विधायक अजय विश्नोई को दिया और उन्हें एक विजनरी लीडर बताया। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र नुनसर के लोकार्पण समारोह को सांसद आशीष दुबे एवं विधायक अजय विश्नोई ने भी संबोधित किया तथा इस सौगात के लिये क्षेत्र की जनता की ओर से उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल का आभार व्यक्त किया। समारोह में पाटन नगर परिषद के अध्यक्ष आचार्य जगेंद्र सिंह, राजकुमार पटेल एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि और नागरिक भी मौजूद थे।

सचिव ग्राम पंचायत उचिया निलंबित

दतिया (आरएनएस)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत दतिया अक्षय कुमार तेमवाल ने आदेश जारी कर विगत दिवस ग्राम पंचायत ऊचियाँ के सचिव नवल किशोर पटवा को मध्य प्रदेश (पंचायत सेवा पंचायत सचिव भर्ती और सेवा की शर्तें) नियम 204 के नियम साथ एवं मध्य प्रदेश पंचायत सेवा अनुरूप तथा अवधि नियम 1999 के तहत उक्त कृत्य शासन की हितग्राही मलक योजना के प्रति लापरवाही निर्देश की की अवहेलना करना एवं अपने कार्यों एवं दायित्व को सुधारो रूप से निर्वहन नहीं किए जाने से उदासी नव्या एवं लापरवाही के सदाचार के कारण तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया है।उन्होंने बताया कि जिला आपूर्ति अधिकारी जिला दतिया का पत्र क्रमांक 314 दिनांक 18 अप्रैल 2025 साथ संलग्न जांच प्रति वेतन 30 अक्टूबर 2024 के अनुसारज ग्राम उचिया अनुसूचित जाति समुदाय के लोग शासकीय उचित मूल्य दुकान पर माह सितंबर 2024 का राशन लेने हेतु गए थे गए तो लगभग 95 हितग्राहीयो पात्रता पर्ची बिना किसी करण के बंद होने का कारण परिवार दर्ज पात्रता श्रेणी अंतर्गत पत्र नहीं है जबकि काटे गए सभी हितगाही एसध्एसटीध्बीपील पात्रताधारी है। राशन कार्ड फर्जी तरीके से काटे गए हैं, जिस कारण से पत्र उपभोक्ताओं को माह सितंबर अक्टूबर 2024 का राशन का लाभ लेने से वंचित किए गए थे। नवल किशोर पटवा सचिव ग्राम पंचायत उचिया दोबारा स्वयं एम, राशन मित्र पोर्टल पर सत्यापन करते हुए अनाधिकृत व्यक्ति द्वारा ऑनलाइन कराए गए थे।

छात्राओं को बेस्ट ऑउट ऑफ वेस्ट सामग्री का निर्माण करना सिखाया

इन्दौर (आरएनएस)। शासकीय सांदीपनि अहिल्याश्रम कन्या उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक-2 में बहुदेशीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में मास्टर ट्रेनर उमा तिवारी और दीपिका बागोरा ने छात्राओं को बताया कि कैसे बेकार, अनुपयोगी और कूड़ेदान में डालने लायक सामग्री को थ्रेड आर्ट और टेरा कोटा कांच का उपयोग कर उसे शोकेस में रखने या घर की साज-सज्जा करने लायक बनाया जा सकता है।

प्राचार्य दीपक हलवे ने बताया कि योगा प्रशिक्षक अनिता शर्मा और खुशबू वर्मा ने योग की विभिन्न मुद्राओं सहित मनमोहक जुम्बा डांस सिखाया। खेल प्रशिक्षक अशोक यादव और शिरीष कलंकी ने बैडमिंटन ,सितोलिया , शतरंज और कैरम की बारीकियां सिखाई।

सिंगरौली जिले में आबकारी विभाग की अवैध शराब के विरुद्ध कार्यवाही ''

सिंगरौली जिले में आबकारी विभाग की अवैध शराब के विरुद्ध कार्यवाही ''

सिंगरौली,(आरएनएस)। सिंगरौली 2 मई 2025/कलेक्टर सिंगरौली चंद्रशेखर शुक्ला के निर्देशन मे एवं जिला आबकारी अधिकारी खेमराज श्याम के मार्गदर्शन में वृत वैढ़न के अंतर्गत अवैध शराब के संग्रहण एवं विक्रय की सूचना मिलने पर कार्यवाही की गई। तलाशी कार्यवाही दौरान पप्पू शाह पिता मान प्रसाद शाह उम्र 35 वर्ष ग्राम पिपरा कुरंद थाना वैढ़न को ग्राम टूसाखाढ में बीजपुर रोड पर सड़क के किनारे थाना वैढ़न से एक काले रंग की आटो जिसका क्रमांक एमपी 66 आर 2203 उसके पिछली सीट पर 06 कार्टून जिसमे देसी मदिरा प्लेन प्रत्येक कार्टून में 50 नग (कुल 300पाव) मदिरा कुल 54 बीएल मदिरा ' बरामद कर 'मध्य प्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 संशोधित 2000 की धारा 34(1)(क) एवम 34(2) के तहत प्रकरण दर्ज कर मौके पर आरोपी को गिरफ्तार किया गया एवं जब्त वाहन एक काले रंग की आटो जिसका क्रमांक: एमपी 66 आर 2203 को कब्जे लिया गया। उक्त आरोपी को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया जहां से आरोपी को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया ।

सिनावल आरोग्य मंदिर में सेक्टर स्तरीय बैठक का हुआ आयोजन

दतिया (आरएनएस)। आरोग्य मंदिर सिनावल पर सेक्टर स्तरीय बैठक का आयोजन शनिवार को किया गया। जिसमें क्षेत्र के प्रभारी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. बी.के. वर्मा, मुख्य खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. जयंत प्रताप सिंह यादव सहित समस्त सीएचओ, एएनएम, आशा सुपरवाइजर एवं सिनावल, बरगांय और भाषणाखुर्द की आशा शामिल हुईं।समीक्षा के दौरान सीएमएचओ डॉ. वर्मा ने वित्तीय वर्ष का एक माह पूर्ण होने के उपरांत एचडब्ल्यूसी के सभी कार्यों की समीक्षा लक्ष्य अनुसार की। बैठक में उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों को निर्देश देते हुए कहा कि अपने क्षेत्र की जनसंख्या के मुताबिक समस्त लक्ष्यों की पूर्ति समय-सीमा में रजिस्टर एवं पोर्टल पर अद्यतन करना सुनिश्चित करें।उन्होंने एएनएम से कहा कि लक्ष्य पूर्ण हो सके इसके लिए क्षेत्र के सभी एएनसी से समन्वय बनाकर उन्हें परामर्श प्रदान करें, ताकि एएनसी, बच्चों का टीकाकरण, पीएनसी, एचबीएनसी, एचबीबाईसी, परिवार कल्याण, मातृ मृत्यु, बाल मत्यु पर रोक जैसे लक्ष्य पूर्ण हो सके।सीएमएचओ डॉ. वर्मा ने सभी सीएचओ को निर्देश दिए कि व्हीएचएसएनडी के लिए एएनएम को जन आरोग्य समिति से जरूरत के मुताबिक सामान उपलब्ध करवायें। जिससे भविष्य में सभी आरोग्य मंदिर में सेक्टर बैठक सहजता से सम्पन्न हो सके।बैठक के दौरान आशा सुपरवाईजर, एएनएम, आशा कार्यकर्ताओं से कहा कि वे स्कूल एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों पर प्राथमिकता के आधार पर आयरन टेबलेट उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। इतना ही नहीं नये विवाहित दम्पत्तियों से सम्पर्क कर उन्हें परिवार कल्याण की सलाह प्रदान करें। उन्होंने अधिकारियों और कर्मचारियों से प्रतिदिन सार्थक एप पर समय से उपस्थिति दर्ज करने के भी निर्देश दिए।

खेत में काम कर रहे किसान को जबड़े में दबाकर ले गया बाघ

बालाघाट,(आरएनएस)। शनिवार सुबह बालाघाट में कटंगी रेंज के कुडवा कॉलोनी के पास खेत में काम कर रहे किसान पर बाघ ने हमला कर दिया। किसान की मौके पर ही मौत हो गई। बाघ शरीर का निचला हिस्सा खा गया।प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि हम लोग रोज की तरह सुबह पांच बजे खेत में काम करने पहुंच गए थे। करीब 6 बजे बाघ ने पीछे से प्रकाश पाने (45) पर हमला कर दिया। हम लोग चिल्लाते हुए वहां से भागे। थोड़ी दूर जाकर हमने पत्थर फेंककर बाघ को भगाने की कोशिश भी की। तब तक बाघ उसे अपना शिकार बना चुका था।हम लोगों ने देखा कि बाघ प्रकाश को जबड़े में दबाकर घसीटते हुए खेत में ले गया और बैठ गया। इस बीच वो दो बार दहाड़ा भी। घटना के बाद वन विभाग के प्रति ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने वन चौकी का घेराव कर दिया ग्रामीणों का कहना है कि हम लोग एक हफ्ते पहले से वन विभाग के अफसरों को बता रहे थे कि हमारे खेतों में बाघ घूम रहा है। इसके बाद भी कोई एक्शन नहीं लिया गया। वन विभाग की लापरवाही की वजह से हमारे साथी की मौत हो गई। बाघ के हमले से पहले भी मौतें हो चुकी हैं।

व्यापार समाचार

आरबीआई पैनल ने कॉल मनी मार्केट का समय बढ़ाकर शाम 7 बजे करने का दिया सुझाव

मुंबई (आरएनएस)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा सेटअप एक वर्किंग ग्रुप ने कॉल मनी मार्केट के लिए ट्रेडिंग के घंटे बढ़ाने की सिफारिश की है। ग्रुप ने सुझाव दिया है कि ट्रेडिंग विंडो शाम 5 बजे तक ओपन रखने के बजाय 2 घंटे बढ़ाकर शाम 7 बजे तक ओपन रखनी चाहिए। इस कदम का उद्देश्य बैंकों को रियल-टाइम पेमेंट सिस्टम की जरूरतों के अनुरूप अपने फंड को बेहतर ढंग से मैनेज करने में मदद करना है। हालांकि, ग्रुप ने सरकारी प्रतिभूतियों, ब्याज दर डेरिवेटिव या विदेशी मुद्रा बाजारों जैसे दूसरे वित्तीय बाजारों के लिए ट्रेडिंग के घंटों में कोई बदलाव करने का सुझाव नहीं दिया।

वर्किंग ग्रुप की अध्यक्षता राधा श्याम राठो ने की, जो आरबीआई में कार्यकारी निदेशक हैं। आरबीआई ने इस साल फरवरी में अपनी मौद्रिक नीति समीक्षा के दौरान इस ग्रुप के गठन की घोषणा की थी। ग्रुप की रिपोर्ट में कहा गया है कि स्टैंडअलोन प्राइमरी डीलर्स (एसपीडी) ने कॉल मनी मार्केट में लंबे समय तक ट्रेडिंग के घंटे मांगे थे। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि रद्द किए गए लेनदेन को मिलाकर रिपोर्टिंग विंडो का समय शाम 7.30 बजे तक बढ़ाना चाहिए। रिपोर्ट में पिछले दशक में ओवरनाइट मनी मार्केट में दर्ज शानदार वृद्धि पर प्रकाश डाला गया है। 2014-15 और 2024-25 के बीच, इस बाजार में वार्षिक कारोबार 281.37 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर 1,324.05 लाख करोड़ रुपए हो गया।

इस बीच, दैनिक औसत कारोबार 1.17 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर 5.52 लाख करोड़ रुपए हो गया। यह तेज वृद्धि मुख्य रूप से बाजार के कोलैटरलाइज्ड सेगमेंट में वृद्धि के कारण हुई। इसी अवधि के दौरान इस सेगमेंट में कारोबार 245.27 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर 1,296.62 लाख करोड़ रुपए हो गया। इसके विपरीत, अनकोलैटरलाइज्ड कॉल मनी मार्केट में कारोबार 36.10 लाख करोड़ रुपए से घटकर 27.42 लाख करोड़ रुपए हो गया। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि कॉल मनी मार्केट केवल बैंकों और एसपीडी के लिए खुला है। इन प्रतिभागियों के पास आरबीआई की लिक्विडिटी एडजस्टमेंट सुविधाओं तक पहुंच है। इस बाजार में मुख्य ऋणदाता सहकारी बैंक हैं, जबकि एसपीडी मुख्य उधारकर्ता हैं।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 688 बिलियन डॉलर के पार पहुंचा

मुंबई (आरएनएस)। आरबीआई के शुक्रवार को जारी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार लगातार आठवें सप्ताह बढ़कर 25 अप्रैल तक 688.13 बिलियन डॉलर पर पहुंच गया है। सप्ताह के दौरान विदेशी मुद्रा भंडार में 1.98 बिलियन डॉलर की वृद्धि हुई। भंडार का विदेशी मुद्रा घटक 2.17 बिलियन डॉलर बढ़कर 580.66 बिलियन डॉलर हो गया। विदेशी मुद्रा भंडार का स्वर्ण भंडार घटक 207 मिलियन डॉलर घटकर 84.37 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 21 मिलियन डॉलर बढ़कर 18.59 बिलियन डॉलर हो गया। रुपए में उतार-चढ़ाव को कम करने में मदद करने के लिए आरबीआई के पुनर्मूल्यांकन और विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप से पिछले महीनों में विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट का रुख अब पिछले दो महीनों में उलट गया है। इससे पहले, सितंबर 2024 में देश का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 704.885 बिलियन डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था। देश के विदेशी मुद्रा भंडार में किसी भी तरह की मजबूती से अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपए को मजबूती मिलती है, जो अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है। विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि अर्थव्यवस्था की मजबूत बुनियाद को दर्शाती है और आरबीआई को रुपए में उतार-चढ़ाव आने पर उसे स्थिर करने के लिए अधिक गुंजाइश देती है। मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार आरबीआई को रुपए को गिरने से रोकने के लिए अधिक डॉलर जारी कर हाजिर और अग्रिम मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप करने में सक्षम बनाता है।

दुनिया में सबसे ज्यादा सैलरी पाने वाले सीईओ हैं जिम एंडरसन

टिम कुक, मस्क और सत्य नडेला को भी जिम ने सैलरी मामले में पछाड़ दिया

नई दिल्ली (ए.)। दुनिया में सबसे ज्यादा सैलरी जिम एंडरसन को मिलती है। ऐपल सीईओ टिम कुक, टेस्ला के एलन मस्क और माइक्रोसॉफ्ट के सत्य नडेला को भी सैलरी मामले में जिम एंडरसन ने पछाड़ दिया है। वे अमेरिका की ऑप्टिकल मैटेरियल और सेमीकंडक्टर बनाने वाली कंपनी कोहेरेंट कॉर्प की कमान संभालते हैं। साल 2024 में उन्हें 101।5 मिलियन डॉलर (लगभग 845 करोड़) रुपये वेतन के रूप में मिले। ईक्वीलर 100 सूची उन कंपनियों के सीईटो की सैलरी को दर्शाती है जिनकी वार्षिक आय 1 अरब डॉलर या उससे अधिक है। एंडरसन का वेतन लगभग पूरी तरह शेयर अवॉर्ड्स पर आधारित था। यह राशि 2024 में अमेरिकी कंपनियों के औसत वेतन 25।6 मिलियन से चार गुना से भी ज्यादा है। जिम एंडरसन कोहेरेंट कॉर्प में आने से पहले लैटिस सेमीकंडक्टर के सीईओ थे। साल 2024 के मध्य में उन्होंने लैटिस से इस्तीफा दिया था। उनके इस्तीफे की खबर से लैटिस के शेयर 16 फीसदी गिर गए, जबकि कोहेरेंट के शेयरों में 23 फीसदी का जबरदस्त उछाल आया। सबसे ज्यादा वेतन पाने वाले सीईओ की सूची में दूसरे स्थान पर स्टारबक्स के ब्रायन निकोल रहे। उन्हें सितंबर 2024 में सीईओ बनने के बाद 95.8 मिलियन डॉलर का पैकेज मिला, जिसमें 90 फीसदी से अधिक हिस्सा लॉन्ग-टर्म इक्विटी अवॉर्ड्स का था।

इनसाइडर ट्रेडिंग मामले में ओला इलेक्ट्रिक की बढ़ सकती हैं मुश्किलें

जांच शुरू, ओला इलेक्ट्रिक से संबंधित पार्टी लेनदेन भी सेबी के रडार पर

नई दिल्ली (ए.)। ओला इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड की इनसाइडर ट्रेडिंग के मामले में मुश्किलें बढ़ सकती हैं। सूत्रों के हवाले से एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है कि बाजार नियामक सेबी अक्टूबर और दिसंबर 2024 के बीच इनसाइडर ट्रेडिंग के दो मामलों में भाविश अग्रवाल की अगुआई वाली ओला इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड की जांच शुरू कर दी है। रिपोर्ट में उल्लिखित है कि ओला इलेक्ट्रिक द्वारा संबंधित पार्टी लेनदेन भी सेबी के रडार पर है। इस खबर के बाद ओला इलेक्ट्रिक के शेयर बिकवाली मोड में नजर आए। पिछले सप्ताह करीब 48 रुपये के स्तर पर शेयर एक फीसदी टूटकर गिरे। इसके अलावा ओला इलेक्ट्रिक को अपने कुछ स्टोरों के लिए व्यापार प्रमाणपत्रों के संबंध में चार राज्यों में नोटिस भी मिले और कंपनी ने बताया है कि उसे इसका जवाब देने की प्रक्रिया में है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार महाराष्ट्र के अधिकारियों ने ओला को एक नोटिस भी भेजा है, जिसमें महाराष्ट्र में 100 से अधिक शोरूम को तत्काल बंद करने का आदेश दिया गया था। स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग में ओला इलेक्ट्रिक ने बताया है कि उसने फरवरी में 25,000 इकाइयां बेचीं और इसकी बाजार हिस्सेदारी 28 प्रतिशत रही। इसके बावजूद, भारी उद्योग मंत्रालय और भारत के सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय से ओला इलेक्ट्रिक को ईमेल प्राप्त हुए हैं, जिसमें बिक्री आंकड़ों के बड़े अंतर के कारण पूछे गए हैं।

आरबीआई ने चार बैंकों पर लगाया जुर्माना

- नियामक अनुपालन में कमियों के लिए लगाया गया जुर्माना

मुंबई (ए.)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने कहा कि उसने नियामक अनुपालन में कमियों के लिए आईसीआईसीआई बैंक और बैंक ऑफ बड़ौदा सहित चार बैंकों पर जुर्माना लगाया है। आरबीआई ने बैंकों में साइबर सुरक्षा ढांचे, अपने ग्राहक को जानो (केवाईसी) और क्रेडिट कार्ड तथा डेबिट कार्ड जारी करने से संबंधित कुछ निर्देशों का पालन न करने के लिए आईसीआईसीआई बैंक पर 97.80 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। एक अन्य बयान में, आरबीआई ने कहा कि उसने बैंकों की वित्तीय सेवाओं और बैंकों में ग्राहक सेवा पर कुछ निर्देशों का पालन न करने के लिए बैंक ऑफ बड़ौदा पर 61.40 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। इसके अलावा केंद्रीय बैंक ने कुछ अनुपालन खामियों के चलते आईडीबीआई बैंक लिमिटेड पर 31.8 लाख रुपए और बैंक ऑफ महाराष्ट्र पर 31.80 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है।

वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के बीच पूनम गुप्ता ने आरबीआई के डिप्टी गवर्नर का पदभार संभाला

नई दिल्ली (ए) भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की नई डिप्टी गवर्नर डॉ. पूनम गुप्ता ने शुक्रवार को पदभार संभाला और अब वे केंद्रीय बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) का हिस्सा होंगी। केंद्र सरकार ने उन्हें 2 अप्रैल को डिप्टी गवर्नर के पद पर नियुक्त किया था। पदभार ग्रहण करने के दिन से उनका कार्यकाल तीन वर्ष या अगले आदेश तक रहेगा। वैश्विक आर्थिक चुनौतियों और उतार-चढ़ाव वाली मुद्रास्फीति दरों के बीच डॉ. गुप्ता की विशेषज्ञता महत्वपूर्ण होगी।

आरबीआई के एक बयान के अनुसार, डिप्टी गवर्नर के रूप में डॉ. गुप्ता मौद्रिक नीति विभाग, वित्तीय बाजार परिचालन विभाग, आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग, वित्तीय स्थिरता विभाग, अंतरराष्ट्रीय विभाग, सांख्यिकी और सूचना प्रबंधन विभाग, कॉर्पोरेट रणनीति और बजट विभाग और संचार विभाग का कार्यभार संभालेंगी। इससे पहले, डॉ. गुप्ता नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च (एनसीएईआर) की महानिदेशक थीं, जो आर्थिक विकास, इंटरनेशनल फाइनेंशियल आर्किटेक्चर, केंद्रीय बैंकिंग, मैक्रो आर्थिक स्थिरता, सार्वजनिक ऋण और राज्य वित्त से संबंधित मुद्दों पर काम करती थीं। उन्होंने प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य और 16वें वित्त आयोग की सलाहकार परिषद के संयोजक के रूप में भी कार्य किया।

स्मार्टफोन बाजार में श्याओमी टॉप 5 से बाहर, एप्पल इंक पहुंची शीर्ष स्थान पर

वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही में सैमसंग शीर्ष पर थी, फिर ऐपल, वीवो, ओपो और श्याओमी थी

मुंबई (ए.)। चीन की दिग्गज श्याओमी जो कभी भारतीय बाजार में प्रमुख कंपनी थी, 2016 की पहली तिमाही के बाद से पहली बार मूल्य हिस्सेदारी के लिहाज से शीर्ष 5 से बाहर हो गई है। दूसरी तरफ कुपर्टिनो मुख्यालय वाली ऐपल इंक दूसरी तिमाही के दौरान मूल्य के लिहाज से शीर्ष स्थान पर पहुंच गई है। वित्त वर्ष 25 की पहली तिमाही में स्मार्टफोन की थोक बिक्री में अब इसकी हिस्सेदारी एक-चौथाई (26 प्रतिशत) है। पिछले साल इसी अवधि में यह हिस्सेदारी 20 प्रतिशत थी। उसने अपनी सभी प्रमुख प्रतिस्पर्धियों - सैमसंग, वीवो, ओपो और श्याओमी को पछाड़ दिया है। इन ब्रांडों ने पिछले साल की इसी अवधि की तुलना में वित्त वर्ष 25 की पहली तिमाही के दौरान दो-दो प्रतिशत अंक गंवाए, जो ऐपल इंक की कुल बढ़त है। वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही में सैमसंग शीर्ष पर थी। उसके बाद ऐपल, फिर वीवो, ओपो और श्याओमी का स्थान था। शीर्ष 10 में केवल दो ब्रांड ही बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने में सफल रहे हैं। मोटोरोला ने वित्त वर्ष 25 की पहली तिमाही में अपनी मूल्य हिस्सेदारी को दोगुना कर 4 प्रतिशत कर लिया और गूगल की हिस्सेदारी बढ़कर अब 2 प्रतिशत हो गई जो 2024 की पहली तिमाही में 1 प्रतिशत से भी कम थी।

कार्ल पेई के नए ब्रांड नथिंग की हिस्सेदारी प्रचार के बावजूद कैलेंडर वर्ष 25 की पहली तिमाही में एक प्रतिशत रही। इससे पहले कार्ल पेई ने वन प्लस ब्रांड खड़ा किया था।

सम्पादकीय

अभिव्यक्ति हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है,
सत्य प्रस्तुत करना हमारा कर्तव्य

भारत की राष्ट्रीय शक्ति की परीक्षा

भारत इस नतीजे पर है कि पहलगाम हमले को पाकिस्तान के संरक्षण में अंजाम दिया गया। इसलिए इस रास्ते से पाकिस्तान को हटने पर मजबूर करने से पहले रुख नरम ना किया जाए। यह भारत की राष्ट्रीय शक्ति की परीक्षा है। पहलगाम हमले के बाद भारत ने आतंकवादियों और उनके संरक्षकों को सख्त पैगाम देने के कदम उठाए हैं। मगर उनका असर तभी होगा, जब उनके जरिए आर-पार का परिणाम हासिल किया जाए। तात्पर्य यह कि चूंकि भारतीय जांचकर्ता इस नतीजे पर हैं कि आतंकवादी हमले को पाकिस्तान के संरक्षण में अंजाम दिया गया, तो उचित यह होगा कि इस रास्ते से पाकिस्तान को हटने पर मजबूर करने से पहले रुख नरम ना किया जाए। इस रूप में यह भारत की राष्ट्रीय शक्ति एवं संकल्प की परीक्षा है। अतीत के अनुभवों से स्पष्ट है कि प्रतीकात्मक कार्रवाइयों से भारत विरोधी आतंकवादी ढांचा खत्म नहीं किया जा सका। सर्जिकल स्ट्राइक और बालाकोट हमले के बावजूद यह ढांचा बरकरार रहा और हर कुछ अंतराल पर भारत का खून बहाता रहा है, तो अब जरूरत उससे आगे बढ़ने की है। ठोस परिणाम हासिल करने के लिए जरूरी होगा कि भारत अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के दबाव में ना आए। अब तक की प्रतिक्रियाओं से साफ है कि अमेरिका ने फिलहाल इस मामले से खुद को अलग रखने का फैसला किया है। राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप का यह कहना कि दोनों देश उनके करीबी हैं और वे 'इस मामले को खुद हल कर लेंगे', उनके प्रशासन की अंतरराष्ट्रीय विवादों में ना उलझने की नीति के अनुरूप है। अन्य हलकों से भी भारत को अधिक समर्थन मिलने की आशा नहीं है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पहलगाम संबंधी प्रस्ताव को अपने हक में नरम बनवा लेने में पाकिस्तान कामयाब रहा। इसमें उसे चीन का साथ मिला। मगर हैरतअंगेज यह है कि पश्चिमी देशों और रूस ने भी पाकिस्तान का नाम लेकर निंदा या भारत की जांच से सहयोग करने की बात को प्रस्ताव से हटाने का विरोध नहीं किया। ईरान, सऊदी अरब, और मिस्र मध्यस्थता की कोशिश कर रहे हैं, ताकि तनाव नियंत्रित हो सके। ये सारी बातें संकेत हैं कि भारत को अपनी राष्ट्रीय शक्ति पर ही भरोसा करना होगा। अच्छी बात है कि इस बारे में राष्ट्रीय राजनीति में पूरी आम सहमति दिखी है। इसलिए केंद्र को अब पाकिस्तान सामने राष्ट्रीय शक्ति के पूर्ण प्रदर्शन के लिए बेहिचक आगे बढ़ना चाहिए।

केंद्रीय विदेश मंत्री सुब्रह्मण्यम जयशंकर ने नई दिल्ली में द्विपक्षीय बैठक से पहले अंगोला गणराज्य के राष्ट्रपति जोआओ मैनुअल गोंकाल्वेस लौरेंको से मुलाकात की.

राष्ट्रवाद की धारणा बिहार चुनाव को प्रभावित करेगी

अजीत द्विवेदी

जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों की हत्या के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहली जनसभा बिहार में हुई, जहां इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। इसको लेकर सोशल मीडिया में प्रधानमंत्री की खूब आलोचना हो रही है और एक दुखद घटना का राजनीतिक इस्तेमाल करने के आरोप भी लग रहे हैं। इस सिलसिले में सवाल उठाने वाली एक लोक गायिका के ऊपर उत्तर प्रदेश में मुकदमा भी हो गया है। सवाल है कि क्या यह घटना और इसके तुरंत बाद बिहार की धरती से प्रधानमंत्री का आतंकवादियों को कल्पनातीत सजा देने के ऐलान का बिहार के चुनाव में भाजपा और एनडीए को लाभ होगा?

इस बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता है लेकिन इतना तय है कि यह घटना चुनाव को कई तरह से प्रभावित करेगी। पहलगाम कांड और उस पर संभावित प्रतिक्रिया से राष्ट्रवाद और देशभक्ति की जो भावना पैदा होगी वह लोगों के मतदान व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। हो सकता है कि पुलवामा के बाद हुए लोकसभा चुनाव जैसी सुनामी नहीं आए फिर भी राष्ट्रवाद की धारणा चुनाव को प्रभावित करेगी। असल में बिहार में विधानसभा चुनाव के दौरान सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का एजेंडा वैसे काम नहीं करता है, जैसे लोकसभा चुनाव में करता है।

विधानसभा चुनाव में धर्म या सांप्रदायिकता का एजेंडा विफल ही साबित होता है। भाजपा 2015 में इसे आजमा चुकी है। विधानसभा चुनाव में जाति का समीकरण ज्यादा कारगर होता है। तभी सवाल है कि धर्म या सांप्रदायिकता की तरह क्या राष्ट्रवाद का मुद्दा भी काम नहीं करेगा? क्या देशभक्ति का मुद्दा भी लोगों को एनडीए के पक्ष में एकजुट होने के लिए

मजबूर नहीं करेगा? यह बड़ा सवाल है। इस पर बिहार चुनाव का बहुत कुछ निर्भर करेगा।

प्रधानमंत्री की मधुबनी की 24 अप्रैल की जनसभा को इस नजरिए से देखने की जरुरत है। उन्होंने अपनी सभा में कोई हिंदू-मुस्लिम वाली बात नहीं कही। सबको पता है कि पहलगाम में आतंकवादियों ने लोगों से धर्म पूछ कर उनको गोली मारी। लोगों को कलमा पढ़ने को कहा गया और जो नहीं पढ़ पाया उसे गोली मार दी गई। लेकिन प्रधानमंत्री ने जान बूझकर इसका जिक्र नहीं किया। पता नहीं आगे क्या होगा? हो सकता है कि आगे धर्म के आधार पर हत्या का जिक्र किया जाए लेकिन पहली सभा में प्रधानमंत्री का भाषण राष्ट्रवाद और देशभक्ति पर केंद्रित रहा।

उन्होंने पहलगाम की घटना को देश की आत्मा पर हमला बताया और संकल्प किया कि घटना को अंजाम देने वालों को ऐसी सजा मिलेगी, जिसकी उन्होंने कल्पना नहीं की होगी। अब आने वाले दिनों में आतंकवादियों के खिलाफ और पाकिस्तान के खिलाफ जो भी कार्रवाई होगी उसका जिक्र बिहार के संदर्भ के बगैर नहीं होगा। यह कहा जाएगा और खासतौर से बिहार के लोगों को याद दिलाया जाएगा कि प्रधानमंत्री ने बिहार की धरती पर ही संकल्प किया था कि आतंकवाद को मिटा देंगे। यह अपने आप बिहार के लोगों में गर्व की भावना भरने वाली बात होगी। उनकी नसों राष्ट्रवाद का उफान भरने वाली होगी।इसके साथ धर्म का मामला स्वाभाविक रूप से जुड़ेगा। वह एक अंतर्धारा की तरह होगा। जितना प्रत्यक्ष अभी है उतना नहीं होगा। अभी खुल कर यह बात कही जा रही है कि आतंकवादियों ने धर्म पूछ कर लोगों की हत्या की। इस आधार पर कहा जा रहा है कि अब यह धारणा टूट गई कि आतंकवाद का धर्म नहीं होता है। आतंकवाद का धर्म होता है और वह हिंदू विरोधी है। गौरतलब है कि पहलगाम की घटना के तुरंत बाद राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के मुखपत्र 'पांचजन्य' की ओर से सोशल मीडिया में पोस्ट डाली गई कि, 'उन्होंने धर्म पूछा जाति नहीं'।इसका मतलब है कि जाति नहीं धर्म पर ध्यान देने की जरुरत है। उधर बिहार में सभी पार्टियां अपना अपना जातिगत समीकरण बैठाने में लगी हैं। ऐसे में अचानक यह नैरेटिव बने कि जाति नहीं धर्म महत्वपूर्ण है और धर्म सिर्फ पहचान के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए सबसे अहम तत्व है, तो क्या होगा? जाति तोड़ने के लिए धर्म की इस अंतर्धारा के ऊपर राष्ट्रवाद का मुलम्मा चढ़ा होगा, जो चुनाव को प्रभावित करेगा।

मोदी के बदले के बयान में नेतन्याहू के मौजूद साक्षात उदाहरण

हरिशंकर व्यास

प्रधानमंत्री मोदी अंग्रेजी में बोले! वह भी बिहार की जनसभा में! कहा, 'हम उन्हें धरती के अंतिम छोर तक खदेड़ेंगे। पहलगाम के दोषियों को मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है। आतंकियों को कल्पना से भी बड़ी सजा मिलकर रहेगी'। सवाल है पहलगाम की आंतकी घटना के दोषी कौन हैं? पुलिस ने जिन तीन आतंकवादियों के फोटो जारी किए हैं उनको खोजना, मारना, मिट्टी में मिलाने का काम वह सजा नहीं हो सकती है, जिस पर प्रधानमंत्री कहे कि उन्हें कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी।

आतंकी तो मौत की तैयारी के निश्चय से ही बनता है। असल बाद आतंकवाद को मिट्टी में मिलाने की है। और उसका हाल-फिलहाल ठोस उदाहरण इजराइल के नेतन्याहू देते हुए हैं। यहूदियों के साथ हमास के आतंकियों ने जो किया वह जगजाहिर है। उसके अधिक भयावह वारदात पहलगाम में मासूम पर्यटक हिंदुओं पर आतंकियों की बेरहमी थी। देश हिला और पूरी दुनिया भारत के साथ खड़ी है।

भारत ने पहलगाम के दोषियों में सीधे तौर पर पाकिस्तान पर न केवल ऊंगली उठाई है, बल्कि उसके खिलाफ फैसले किए हैं। सो, दुनिया को साफ बता दिया कि पाकिस्तान दोषी है। स्वाभाविक है कि उसे वैसा ही सबक सीखना मोदी की कसम है, जैसे इजराइल के नेतन्याहू ने गाजा को मिट्टी में मिलाया है। आतंकियों के पैरोकार ईरान, लेबनान, यमन, सीरिया पर भी ढेरों मिसाइलें दागीं।

हां, इस हवाबाजी का जीरो अर्थ है कि सिंधु जल संधि स्थगित करने से पाकिस्तान प्यासा मर जाएगा। उसकी सेहत पर इसलिए असर नहीं होना है क्योंकि भारत ने पानी रोकने याकि उसके संग्रह के लिए बांध, बैराज नहीं बनाए हुए हैं। भारत ने तुरंत पाकिस्तान को लक्षित करके जो भी कदम उठाए है उससे पाकिस्तान पर असर नहीं होना है। उलटे भारत को भी आर्थिक नुकसान होगा।

असल बात प्रधानमंत्री मोदी के मुंह से निकले ये वाक्य हैं कि, 'धरती के अंतिम छोर तक खदेड़ेंगे। पहलगाम के दोषियों को मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है'। इसका अर्थ है नेतन्याहू जैसी या उससे भी बड़ी बदले की कार्रवाई। आंतकवाद के खिलाफ जंग में पहले अमेरिका ने (9/11 के बाद) और हाल में दो वर्षों से इजराइल के नेतन्याहू ने प्रतिमान बनाया है। बुश और नेतन्याहू से भी ज्यादा भारी जुमला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार की जनसभा में कहा है।

क्या यह कहना बिहार के आगामी चुनाव में लोगों के वोट लेने के लिए है या सचमुच आतंकवाद की जड़ पाकिस्तान को मिट्टी में मिला देने या उसे हैसियत दिखाने की कसम है? गीदड़भभकी है, थोथा चना बाजे घना है या नेतन्याहू की तरह सैनिक अभियान का बिगुल है?

गड़बड़ यह है कि बदला और खासकर देश की आन, बान शान से जुड़ी बदले की कार्रवाई का इरादा जनसभा में जाहिर नहीं होना चाहिए। हिसाब से भारत के लिए आदर्श स्थितियां हैं। दुनिया का कोई देश आज पाकिस्तान के साथ नहीं है। अमेरिका से चीन को जैसी परेशानी है उसमें वह भारत के खिलाफ नहीं जा सकता।पहलगाम की आतंकी घटना का बदला लेने की भारत की कार्रवाई में अमेरिका, रूस, यूरोपीय संघ, जापान आदि सभी देश भारत के साथ मौन रहेंगे। बावजूद इसके पाकिस्तान एटमी हथियारों से लैस तो है। दुनिया चिंता तो करेगी। हमास, लेबनान, ईरान आदि से बदला लेने की इजराइल की ग्राउंड रियलिटी में बहुत कुछ अलग है। जबकि पाकिस्तान का मसला अलग तरह का है।इसलिए लाख टके का सवाल है कि प्रधानमंत्री मोदी ने 'मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है' का जुमला क्या हिसाब लगा कर बोला? क्या सेना भेजकर पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को लेने का लक्ष्य है ताकि वहां से ऑपरेट करने वाले आतंकियों का झंझट हमेशा के लिए खत्म हो? ऐसे ही नेतन्याहू ने सोच कर हमास के मददगार इलाकों पर सैनिक हमले किए। हाल में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को ले सरकार के कई मंत्रियों के बयान आए है। तो क्या पीओके पर कब्जे से भारत का बदला लेना पूरा होगा? कुल मिलाकर प्रधानमंत्री मोदी के बदले के बयान में नेतन्याहू के मौजूद साक्षात उदाहरण से यह भारी सस्पेंस बना है कि कैसे भारत पहलगाम के दोषियों को मिट्टी में मिलाता है!

अंततः देश में जाति जनगणना प्रतिनिधित्व या पुनरुत्थान?

प्रियंका सौरभ

भारत में दशकों से केवल अनुसूचित जातियों और जनजातियों की गिनती होती रही है, जबकि अन्य जातियाँ नीति निर्माण में अदृश्य रहीं। जाति जनगणना केवल गिनती नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय की नींव है। बिना सटीक आंकड़ों के आरक्षण, योजनाएं और संसाधन वितरण अधूरे रहेंगे। विरोध करने वालों को डर है कि उनके विशेषाधिकार चुनौती में पड़ सकते हैं। लेकिन यह गिनती वंचितों की दृश्यता और भागीदारी सुनिश्चित करने का औज़ार है, न कि समाज को तोड़ने का। जब नीति जाति पर आधारित हो, तो डेटा भी होना चाहिए।

भारत को जातियों में बाँटा गया, लेकिन उसे जोड़ने की कोशिश कभी पूरी ईमानदारी से नहीं हुई। संविधान ने सबको समानता का अधिकार दिया, मगर समान अवसर की नींव जातिगत असमानता को पहचानने पर ही टिकती है। इसी बुनियाद पर जब आज जाति जनगणना की मांग ज़ोर पकड़ रही है, तो सवाल खड़ा होता है — क्या यह सामाजिक न्याय का औज़ार है या समाज को और अधिक खांचों में बाँटने की कवायद?

भारत में पिछली बार व्यापक जातिगत जनगणना 1931 में हुई थी। उसके बाद, आज़ादी के बाद के राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में एक आदर्श सामने रखा गया — 'जातिविहीन समाज'। इस आदर्श का आकर्षण था, पर व्यवहार में यह एक तरह की चुप्पी थी। 1951 से लेकर 2011 तक हर जनगणना में केवल अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) की गिनती होती रही, बाकी जातियाँ 'अदृश्य' रहीं। लेकिन अगर नीति आरक्षण आधारित हो, योजनाएं वर्गों के लिए हों, तो आंकड़े क्यों न हों? क्या यह संभव है कि बिना जानकारी के न्यायपूर्ण वितरण हो?

बिहार की जाति आधारित सर्वेक्षण ने एक नई लहर पैदा की। नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव की पहल ने अन्य राज्यों को भी सोचने पर मजबूर किया। एक ओर जातिगत गणना को सामाजिक न्याय की बुनियाद बताया गया, तो दूसरी ओर कुछ वर्गों ने इसे सामाजिक विभाजन का उपकरण कहा। कई राजनीतिक दल इस मांग को समर्थन दे रहे हैं, खासकर वे जिनकी राजनीति वंचित तबकों पर आधारित है। लेकिन केंद्र सरकार की भूमिका झिझकभरी रही है। केंद्र का कहना है कि यह बेहद जटिल प्रक्रिया है और इससे सामाजिक तनाव पैदा हो सकते हैं।

मेष राशि- आज आपका दिन मिला-जुला रहने वाला है। आज किसी काम के सिलसिले में भागदौड़ करेंगे। इस राशि के छात्र जो किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं, उन्हें जल्द सफलता मिलेगी। आज दान पुण्य के कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। आज आपकी बातों से दोस्त प्रभावित होंगे।

वृष राशि- आज आपका दिन शानदार रहेगा। परिवार वालों का हंसी-मजाक भरा बरताव घर के वातावरण को और खुशनुमा बनाये रखेगा, साथ ही आपकी निजी लाइफ बेहतर रहेगी। आज आपके विरोधी आपसे काम में आपकी राय मांगेंगे। सरकारी विभाग के लोगों की नौकरी में सुखद परिवर्तन आएगा। ट्रांसफर से जुड़ी अच्छी खबर मिलेगी।

मिथुन राशि- आज आपका दिन खुशहाल रहने वाला है। इलेक्ट्रॉनिक्स के कारोबारियों को लाभ के योग बन रहे हैं। आप अपने व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय अपने बच्चों के लिए निकालेंगे, जिसमें उनके साथ खूब इंजॉय करेंगे। आज शाम का डिनर बाहर करेंगे। शिक्षकों के ट्रांसफर की परेशानियां खत्म होंगी। आज व्यापार में सफलता के अनेक अवसर मिलेंगे। स्वास्थ्य के लिहाज से आज का दिन बढ़िया रहेगा।

कर्क राशि- आज आपका दिन अच्छा रहेगा। प्रतियोगी परीक्षा में प्रयासरत छात्रों को जल्द सफलता मिलेगी। आज रास्ते पर किसी जरूरतमंद की मदद करने का मौका मिलेगा, इससे आपको बेहद खुशी मिलेगी। आज किसी सामान की श्वख्छ पूरी हो जाएगी, नया सामान लेने का मन बनायेंगे। आज बच्चे आपसे किसी निर्णय में आपकी राय मागेंगे। आज ऑफिस के कार्यों में व्यस्त रहेंगे। स्वास्थ्य के नजरिये से आज का दिन अच्छा रहेगा। आप दूसरों के साथ बेहद व्यवहारिक रहेंगे।

सिंह राशि- आज आपका दिन नई उमंगें लेकर आया है। काफी समय से किसी बात से परेशान लोग, आज उसका समाधान ढूंढ लेंगे। नौकरी कर रहे लोगों को अपनी नौकरी में तरक्की के अवसर मिलेंगे। आपकी बात करने की कला से लोग प्रभावित होंगे। आपकी तरक्की के मौके बढ़ेंगे। परिवार में एक दूसरे को समझकर आगे बढ़ेंगे।

कन्या राशि- आज आपका दिन फेवरेबल रहेगा। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थल पर जा सकते है। आज आपका मन किसी रचनात्मक कार्य में लगेगा। आज लोगों से आपका संपर्क जुड़ेगा जो आपके लिए मददगार साबित होगा। होटल के कारोबारियों को आज रोज की अपेक्षा ज्यादा लाभ होने वाला है। साथ ही आपकी आमदनी में बढ़ोतरी होगी। आज परिवार के लोगों के साथ अच्छा तालमेल बनेगा।

तुला राशि- आज आपका दिन अनुकूल रहने वाला है। जॉब की तलाश कर रहे लोगों को किसी अच्छी कंपनी में जॉब मिलेगी। छात्रों का आज पढ़ाई में मन लगेगा। साथ ही किसी प्रतियोगिता में भाग लेंगे। आज किसी को दिए रुपए आपको वापस मिलेंगे। अपने रुके कार्य को पूरी मेहनत से आज पूरा कर लेंगे। आपके दांपत्य जीवन में सुख सौहार्द्र बढ़ेगा, साथ ही बच्चों के साथ पिकनिक का प्रोग्राम बना सकते हैं।

वृश्चिक राशि- आज आपका दिन बेहतरीन रहेगा। कारोबार में अपनी मेहनत से आगे बढ़ेंगे। आज अच्छी खबर आपको मिलेगी। आज बच्चों के साथ समय बिताएंगे, उनके मन की बातों को समझेंगे। आज बाहर के ऑयली खाने को जहां तक हो सके अवॉयड करें। आज बिना किसी के मदद के भी आप धन कमा पाने में सक्षम होंगे, बस आपको खुद पर विश्वास करने की जरूरत है।

धनु राशि- आज आपका दिन व्यस्तता से भरा रहने वाला है। आज व्यक्तिगत जीवन की जिम्मेदारियों का निर्वाहन करेंगे। इस राशि के राजनीति से जुड़े लोगों को अन्य लोगों का समर्थन मिलेगा। लोग आपके कार्यों की तारीफ करेंगे।

मकर राशि- आज आपका दिन खुशी से भरा रहेगा। सॉफ्टवेयर इंजीनियर्स को प्रमोशन के अच्छे चांस मिलेंगे। आज बेटी के परीक्षा का अच्छे रिजल्ट से पारिवारिक माहौल खुशनुमा बनेगा। आज आपकी टेंशन कम होंगी। आपको किसी रिश्तेदार को दिया धन वापस मिल जायेगा। साथ ही अधूरी कार्य योजनाओं को पूरा करने में बड़ों का आशीर्वाद मिलेगा।

कुंभ राशि- आज आपका दिन बढ़िया रहने वाला है। आज संतान पक्ष से शुभ समाचार मिलेगा, जिससे पूरे दिन आप खुश रहेंगे। आज आपको धन लाभ के अवसर मिलेंगे, किसी भी अवसर को हाथ से जाने न दें। आज आपकी कोशिशें कामयाब होंगी। आप पिता की जिम्मेदारियां निभाने का पूर्ण प्रयास करेंगे। आज व्यापार में स्थिति अनुकूल बनी रहेगी। आपके द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों की तारीफ होगी, लोगों में सम्मान बढ़ेगा। अचानक धन लाभ होने से मन प्रसन्न रहेगा।

मीन राशि- आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज आपकी वाणी में मधुरता आएगी, जिससे लोग आपकी बातों से प्रभावित होंगे। आज आपको आय के स्रोत मिलेंगे। आज बड़ों की सलाह मिलेगी, साथ ही आपका अच्छा संपर्क जुड़ेगा। आपको हर कदम पर दोस्तों का सहयोग मिलेगा। आज किसी सामाजिक समारोह में शामिल होने का मौका मिलेगा। दोस्तों से गिफ्ट मिल सकता है।

वैदिक एवं पश्चिमी वैचारिकता में अंतर्द्वंद।

संजीव ठाकुर,

भारतीय संस्कृति हमें अपने भारतीय होने का एहसास कराती है। जो हमें विश्व के अन्य देशों से विकास की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। भारत में अनेक परंपराएं ऐसी हैं जो सामाजिक जीवन को अधिक सभ्य एवं अच्छा इंसान बनाए रखने में योगदान देती है। जिनसे मनुष्यता का जीवन जीने की प्रेरणा भी मिलती है। यांत्रिक उपकरणों की तरह जिंदगी जीना भी कोई जीना है। यह भारतीय संस्कृति में पाश्चात्य का घालमेल ही है जो मनुष्य के जीवन को यंत्रवत बना देता है। जो आने वाले कल के लिए घातक भी हो सकती है। वहीं दूसरी ओर पाश्चात्य दर्शन की कुछ विशेषताएं भी हैं, जो हमारे विचारों को अधिक तार्किक तथा बौद्धिक बनाती है। जिससे हम अपना जीवन कार्तिक तथा बौद्धिक बना सकते हैं। जिन्हें हम अपने जीवन में क्रियान्वित कर अपने मनुष्य जाति के जीवन को अधिक सार्थक एवं सुलभ बना सकते हैं। निसंदेह हमें रूढ़ीवादी या एकदम पुरातन पंथी संस्कृति से लगाव न रखकर पाश्चात्य संस्कृति के जो फायदे हैं, उन्हें अपनाकर अपना जीवन सरल सार्थक एवं सुगम बना सकते हैं। विवेकानंद जी ने कहा है कि वीणा के तार को ईतना भी ना कसो कि वह टूट जाए, और इतना भी ढीला छोड़ो कि वह बज भी ना पाए, मूलत: हमें दोनों संस्कृतियों की समग्र अच्छाइयों को आत्मसात कर उनकी बुराइयों को त्यागना होगा तब ही जीवन सफल हो सकेगा।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान है। जबकि पश्चिमी सभ्यता भौतिकता लिए होती है, और उसमें भौतिकता की प्रधानता होती है। आध्यात्मिक प्रधान संस्कृति से तात्पर्य भौतिकता वादी दृष्टिकोण से दूर रहकर भौतिकता वादी होने का ही है। प्राचीन काल से ही भारत देश में अतिथि देवो भव और वसुधैव कुटुंबकम वाली संस्कृति रही है। भारत की सांस्कृतिक धरोहर, विश्वास, भावना,आस्था, धर्म, रीति रिवाज जैसे तथ्यों से भरी पड़ी है। धर्म प्रधान संस्कृति होने के कारण ही इसे आध्यात्मिक प्रवृत्ति वाला देश माना गया है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शब्दों में यदि कहें तो ईश्वरत और त्याग पर्यायवाची शब्द है। संस्कृति और सदाचार उसकी बाह्य अभिव्यक्तियाँ है। परंपरागत दृष्टिकोण से हम अपने धार्मिक तथा अध्यात्मिक दर्शन को लेकर बहुत हद तक अपने आप को एवं देश को महिमामंडित करने में लगे रहते हैं। किंतु आज आवश्यकता इस बात की है कि हमें पूर्ण रूप से आध्यात्मिक ना होकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर इस तथ्य का मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि 21 सदी में पांचवी एवं छठवीं सदी की मान्यताएं तथा परंपराएं जारी रख उन्हें अपना सकते हैं क्या?, आज जब दुनिया वैज्ञानिक चमत्कारों से भरी पड़ी है। दुनिया विज्ञान की प्रगति से चांद तो क्या सूर्य को भी खंगालने का प्रयास कर रही है। मानव का क्लोन बनाकर ईश्वर की सत्ता को चुनौती देने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे में धार्मिक संस्कृति तथा आध्यात्मिकता को आवश्यकता से अधिक महत्व एवं परंपरा में लाना प्रासंगिक एवं तार्किक होगा। निसंदेह नहीं।

पाश्चात्य दर्शन भौतिकता प्रधान एवं वैज्ञानिक संस्कृति है। भौतिकता प्रधान युग से तात्पर्य ऐसी परंपरा जो यथार्थवादी दृष्टिकोण को सर्वाधिक महत्व देती है। वैसे ही भौतिकता का सामान्य मतलब इंद्रिय बोध से साक्षात संबंध रखने वाली वस्तु से है, अर्थात जो वास्तविकता है एवं यथार्थ है वही पाश्चात्य दर्शन है। पाश्चात्य संस्कृति को इसलिए भी वैज्ञानिक एवं वस्तु परख माना जाता है क्योंकि इसमें सूक्ष्म जांच पड़ताल कर वस्तु स्थिति का सही मूल्यांकन अपनाकर एक सामान्य सिद्धांत एवं नियम बनाया जाता है। जिससे भविष्य की बातों को जानकर जीवन को और अच्छा तथा बेहतर बनाने में मदद मिल सके।

वैसे पाश्चात्य संस्कृति में बहुत सी अहितकर बातें भी हैं, जैसे वसुधैव कुटुंबकम की भावना कमतर होते जा रही है। संयुक्त परिवार की प्रणाली का विघटन होते जा रहा है। पारिवारिक वातावरण संघर्ष तथा तनावपूर्ण होते जा रहा हैं। पाश्चात्य संस्कृति की नकल कर लोग परिवार से अलग होकर स्वतंत्र जीवन यापन करना पसंद करते हैं। उनमे विवाह विच्छेद और अन्य विसंगतियां जन्म लेने लगी हैं। धर्म तथा आध्यात्मिक के प्रति आमजन की सूची धीरे धीरे कम होते जा रही है। ऐसो आराम के सामान खरीदने के कारण लोगों के खर्चे अनाप-शनाप बढ़ चुके हैं। बुजुर्गों की इज्जत तवज्जो होनी कम हो गई है। दादा और नाती के संबंधों में अब वह गर्माहट शेष नहीं रह गई है, जैसी की एक सांस्कृतिक तथा नैतिक परिवार जनों में हुआ करती थी। धीरे-धीरे परिवार के सदस्य अलग होकर अकेलेपन की समस्या से जूझ रहे हैं। आने वाली पीढ़ी अपनी संस्कृति एवं आध्यात्मिक प्रवृत्ति भूलती जा रही है। प्रेम विवाह तथा अंतर जाति विवाह पाश्चात्य सभ्यता के कारण बहुत बढ़ गए हैं। जिससे वैवाहिक संबंध टूटने के कगार पर आ जाते हैं। पर दूसरी तरफ पाश्चात्य सोच के कारण स्त्री सशक्तिकरण को बढ़ावा भी मिला है महिलाएं जहां पहले अपने घरों में कैद थी अब उन्मुक्त होकर शिक्षित होकर समाज में सफल होकर पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर व्यवसायिक दृष्टिकोण अपनाकर बड़े-बड़े पदों में कार्य कर रही हैं। समाज में खुलापन भी आ गया है। विकास रोजगार एवं मानवीय सोच में भी काफी विस्तार आया है, जो विश्व की सभ्यताओं में आज मौजूद है,जो भारत के विकास में सहायक भी हैं। कुल मिलाकर बात यह है कि हमें आध्यात्मिक भारतीय परंपरा संस्कृति तथा पाश्चात्य दर्शन तथा पाश्चात्य संस्कृति की सकारात्मक बातें आत्मसात कर विकास की एक नई राह खोजनी होगी, एवं सदैव अच्छी बातों के लिए अपने मस्तिष्क को खुला रखना होगा और पाश्चात्य संस्कृति की विसंगतियों को दूर रख भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।

K K

राष्ट्रीय समाचार

रविवार 04 मई 2025,नर्मदापुरम (होशंगाबाद)

दैनिक क्षितिज किरण 5

प्रधानमंत्री मोदी और अंगोला के राष्ट्रपति की द्विपक्षीय बैठक, संबंधों को मजबूत करने पर चर्चा

नई दिल्ली (ए)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को नई दिल्ली के हैदराबाद हाउस में अंगोला के राष्ट्रपति जोआओ मैनुअल गोंकाल्वेस लौरेंको के साथ द्विपक्षीय बैठक की। उन्होंने अफ्रीकी संघ की अध्यक्षता संभालने के लिए अंगोला को हार्दिक बधाई दी।राष्ट्रपति लौरेंको के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, भारत और अंगोला अपने द्विपक्षीय संबंधों की 40वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। हालांकि, हमारे संबंध बहुत पुराने हैं, उस समय से जब अंगोला अपनी आजादी के लिए लड़ रहा था तब भारत ने पूरे विश्वास और मित्रता के साथ उसका समर्थन किया था।

अफ्रीकी संघ का नेतृत्व करने के लिए अंगोला को बधाई देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, यह हमारे लिए गर्व की बात है कि भारत की जी-20 अध्यक्षता के दौरान अफ्रीकी संघ को जी-20 की स्थायी सदस्यता प्राप्त हुई। भारत और अफ्रीकी देशों ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ मिलकर आवाज उठाई। आज, हम, वैश्विक दक्षिण - उसकी आशाओं, अपेक्षाओं और आकांक्षाओं के लिए एकजुट होकर बोलते हैं। प्रधानमंत्री ने पिछले दशक में भारत-अफ्रीका सहयोग में बढ़ती गति का जिक्र करते हुए कहा कि आपसी व्यापार लगभग 100 मिलियन डॉलर तक पहुंच गया।पीएम मोदी ने कहा, पिछले दस वर्षों में, हमने अफ्रीका भर में 17 नए दूतावास खोले हैं। भारत ने अफ्रीकी देशों को 12 बिलियन डॉलर से अधिक की क्रेडिट लाइनें प्रदान की और 700 मिलियन डॉलर का अनुदान दिया। उन्होंने कहा कि आठ अफ्रीकी देशों में व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए गए, और पांच और देशों में डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे में साझेदारी जारी है। अपने संबोधन में राष्ट्रपति लौरेंको ने कहा, मैं प्रशंसा और मित्रता का संदेश देने भारत आया हूं, जिसका इतिहास वैश्विक मंच पर सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और राजनीतिक उपलब्धियों से समृद्ध है। उन्होंने कहा, हम ऐसे संबंध चाहते हैं जो ठोस और हासिल करने लायक उद्देश्यों पर आधारित हों और जिनके व्यावहारिक परिणाम हमारे लोगों के जीवन को प्रभावित करें।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अंगोला गणराज्य के राष्ट्रपति जोआओ मैनुअल गोंकाल्वेस लौरेंको, नई दिल्ली के हैदराबाद हाउस में संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान विदेश मंत्री एस. जयशंकर और अंगोला के विदेश मंत्री टेटे एंटोनियो के बीच समझौता ज्ञापनों के आदान-प्रदान के साक्षी बने।

स्थानीय प्रशासन पीड़ितों की मदद कर रहा', शिरगांव हादसे पर पीएम मोदी ने जताया दुख

नई दिल्ली (आरएनएस)। गोवा के शिरगांव में लैराई देवी जात्रा के दौरान मची भगदड़ में 5 से ज्यादा लोगों की मौत और 30 से अधिक लोगों के घायल होने की घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस दुखद घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया है। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट जारी कर लिखा,गोवा के शिरगांव में भगदड़ के कारण हुई मौतों से दुखी हूं। अपने प्रियजनों को खोने वालों के प्रति संवेदना। घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं। स्थानीय प्रशासन प्रभावित लोगों की सहायता कर रहा है= प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इससे पहले, गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने एक्स पोस्ट में लिखा, आज सुबह शिरगांव के लैराई जात्रा में हुई दुखद भगदड़ से मैं बहुत दुखी हूं। मैं घायलों से मिलने अस्पताल गया और प्रभावित परिवारों को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया।

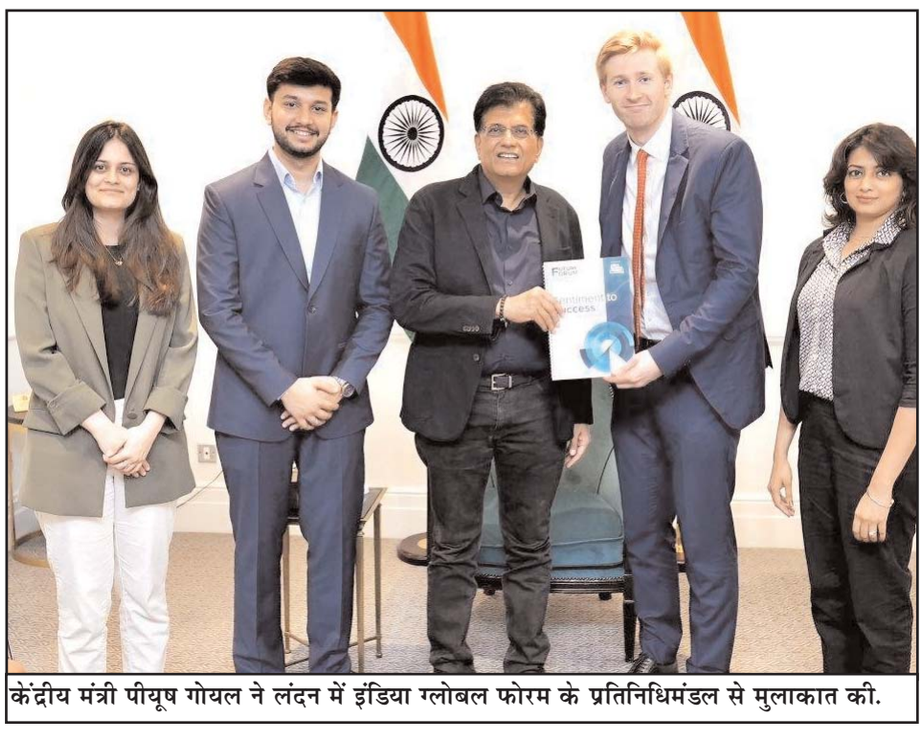

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने लंदन में इंडिया ग्लोबल फोरम के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की.

मुझे सुसाइड बम दीजिए, मैं बांधकर पाकिस्तान जाऊंगा', पहलगाम तनाव के बीच कर्नाटक के मंत्री का बयान वायरल

नई दिल्ली (आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में 26 निर्दोष पर्यटकों की हत्या के बाद देशभर में सुरक्षा की मांग तेज हो गई है। इसी बीच कर्नाटक के अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री बी.जेड. जमीर खान ने शुक्रवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह से अपील की कि उन्हें पाकिस्तान में हमला करने के लिए सुसाइड बम मुहैया कराया जाए।

जमीर खान ने कहा, हम हिन्दुस्तानी हैं और पाकिस्तान हमारा शत्रु रहा है। अगर पीएम मोदी तथा अमित शाह अनुमति दें तो मैं स्वयं सुसाइड बम बांधकर पाकिस्तान जाकर हमला कर दूंगा। उन्होंने पहलगाम हमले की कड़ी निंदा करते हुए घटना को निर्दोष नागरिकों के खिलाफ अमानवीय कृत्य बताया और सभी भारतीयों से ऐकजुट होने की अपील की।

22 अप्रैल को बैसरन मैदान में हुए हमले की जिम्मेदारी आतंकी संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट (TRF) ने ली थी।

लारेंस बिश्नोई की धमकी पर बौखलाया पाकिस्तानी डान शहजाद भट्टी, वीडियो जारी कर कहा मूसेवाला-सिद्दीकी मर्डर के खोल दूंगा सारे राज

नई दिल्ली, (आरएनएस)। पहलगाम हमले को लेकर एक तरफ जहां भारत-पाकिस्तान के बीच तना बना हुआ है तो वहीं दूसरी तरफ इस हमले को लेकर गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई और पाकिस्तानी डॉन शहजाद भट्टी भी आमने सामने हो गए है। डॉन शहजाद भट्टी ने कहा कि अब दोस्ती खत्म अगर देश पर बात आएगी तो चुप नहीं बैठेंगे। डॉन शहजाद भट्टी ने इसकी वीडियो जारी की है।

दरअसल, पहलगाम आतंकी हमले के बाद लॉरेंस ग्रुप ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर की थी, जिसमें पाकिस्तानी आतंकी हाफिज सईद की फोटो पर क्रॉस लगाया था। इस पोस्ट में लिखा- राम-राम सभी भाइयों को, जो ये पहलगाम कश्मीर में आतंकी हमला हुआ। बेगुनाह लोगों को बिना किसी कसूर के मारा है, इसका बदला हम जल्दी ही लेंगे। इन्होंने हमारे नाजायज आदमी मारे हैं। हम इनके जायज मारेंगे। एक ही ऐसा मारेंगे पाकिस्तान में घुसकर, जो 1 लाख के बराबर होगा। तुम हाथ मिलाओगे तो हम गले लगाएंगे, अगर आंख दिखाओगे तो आंखें निकाल लेंगे और ऐसी नीच हरकत करोगे तो पाकिस्तान में घुसकर ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। लॉरेंस ग्रुप की इस धमकी के बाद डॉन शहजाद भट्टी ने वीडियो जारी कर धमकी दी है।वीडियो में भट्टी ने कहा मेरा ये वीडियो लॉरेंस के लिए है। जिसने कहा है कि पाकिस्तान में घुसकर, वह एक लाख मुस्लिमों को मारेगा। पहले तो मैं बता देना चाहता हूं कि पाकिस्तान तो बहुत दूर की बात है, तुम किसी भी देश में एक चिड़िया तक नहीं मार सकते हो। मैं तुम्हें अच्छे से जानता हूं और तुम मुझे भी जानता है कि मेरा सिस्टम क्या है और क्या नहीं। भट्टी ने आगे कहा- मुझे मजबूर नहीं करो, वो तमाम ऑडियो और वीडियो मैसेज में मीडिया में दे दूं। जिसके बाद तुम्हारी सरकार तुमसे सवाल जवाब करे। जिसमें मुंबई के एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी को किस राजनेता के कहने पर मारा गया। तुम सब को पहले से ही पता है कि जीशान अख्तर पहले से ही बाबा सिद्दीकी हत्या केस में शामिल है और वो फरार चल रहा है। साथ ही वो किसके पास है, ये भी सभी को पता है। उसने कहा कि सभी सबूतों के साथ मैं ये सभी वीडियो और ऑडियो मीडिया के सामने रखूंगा। साथ ही किस राजनेता ने जीशान को बाबा सिद्दीकी की हत्या के लिए पैसे दिए, इसके भी सारे प्रूफ मेरे पास है। हत्या के वक्त जीशान के साथ कॉल पर कौन मौजूद था, ये सभी प्रूफ मेरे पास पड़े हैं। किसकी शह पर ये हत्याकांड हुआ, मेरे पास सब के प्रूफ पड़े हैं। भट्टी ने कहा- सिद्धू मूसेवाला किसने मरवाया, किस व्यक्ति ने हथियारों के पैसे दिए, हथियार कहां से आए, किस व्यक्ति ने भारतीय रुपए दिए और क्या-क्या, कहां-कहां हुआ, सब रिकॉर्ड है मेरे पास।

दिल्ली-एनसीआर में आंधी-तूफान का कहर, मौसम विभाग ने फिर दी चेतावनी

नई दिल्ली, (आरएनएस)। दिल्ली, एनसीआर और उत्तर भारत के कई इलाकों में शुक्रवार को आंधी-तूफान ने व्यापक तबाही मचाई। तेज हवाओं और गरज के साथ हुई बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। इस भीषण तूफान में अब तक कई लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि कई अन्य घायल हुए हैं। राजधानी दिल्ली में सैकड़ों पेड़ उखड़ गए, बिजली के खंभे गिर गए और सड़कों पर जाम की स्थिति बन गई।

इसके अलावा, इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 200 से अधिक उड़ानें या तो रद्द की गईं या फिर घंटों देरी से चलीं, जिससे यात्रियों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ा। मौसम विभाग के अनुसार, यह मौसम का बदलाव पश्चिमी विक्षोभ के कारण आया है, जिससे तेज़ हवाओं के साथ गरज-चमक और बारिश की स्थिति बनी हुई है। आज, 3 मई को दिल्ली का न्यूनतम तापमान 19 डिग्री सेल्सियस जबकि अधिकतम तापमान 34 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। विभाग ने चेतावनी दी है कि आज भी दिल्ली और आसपास के इलाकों में गरज-चमक के साथ बारिश और तेज हवाएं चलने की संभावना है।

नाभि ढकी रहेगी तो लड़की सुरक्षित रहेंगी; महिला पहनावे और सुरक्षा को लेकर कथावाचक की अजीब सलाह

नई दिल्ली (आरएनएस)। राजस्थान के जयपुर स्थित विद्याधर नगर स्टेडियम में चल रही शिव महापुराण कथा के दूसरे दिन कथावाचक प्रदीप मिश्रा ने ऐसा बयान दे डाला, जिसने सुनने वालों के होश उड़ा दिए। उन्होंने लड़कियों और महिलाओं को अपनी सुरक्षा के लिए अपने पहनावे पर ध्यान देने की सलाह दी है। प्रदीप मिश्रा ने तुलसी के पौधे की जड़ का उदाहरण देते हुए कहा, जैसे तुलसी की जड़ दिखे तो वह सूख जाती है, वैसे ही लड़कियों की नाभि भी शरीर की जड़ है, इसे ढंककर रखना चाहिए। जितना ढंका रहेगा, उतनी सुरक्षा बनी रहेगी।

इतना ही नहीं, उन्होंने अपराधों के बढ़ने का ठीकरा पहनावे पर फोड़ते हुए कहा, आज के समय में क्राइम इसलिए बढ़ रहे हैं क्योंकि पहनावा बिगड़ गया है। सरकार या पुलिस कुछ नहीं कर सकती, संस्कार ही क्राइम रोक सकते हैं। प्रदीप मिश्रा ने चंचला देवी की कहानी सुनाते हुए महिलाओं को 'सभ्य पहनावे' की नसीहत दी। साथ ही यह भी कहा कि दो बड़ी समस्याएं हैं ड्ड खाना और कपड़ा। उन्होंने वर्तमान पीढ़ी पर भी तीखा तंज कसते हुए कहा कि अब चार अवस्थाएं नहीं बचीं, केवल दो ही बची हैं ड्ड बचपन और बुढ़ापा। मोबाइल ने बच्चों को समय से पहले जवान बना दिया है। कथा के बीच में मिश्रा ने एक घरेलू इलाज का भी जिक्र किया। उन्होंने बताया कि अगर शरीर में कोई गांठ हो तो डॉक्टर को दिखाओ, लेकिन साथ में एक बेलपत्र खा लो। डॉक्टर शिव का रूप हैं, इलाज लो और बेलपत्र से गांठ बाहर निकल जाएगी।

ड्राइवरों की मनमानी, एसईसीएल प्रबंधन और पुलिस के प्रयास को दिखा रहे हैं ठेंगा

कोरबा (आरएनएस)। कोलयंचल क्षेत्र कुसमुंडा में रोड़ सेल टेलर डाइवरों के मनमानी के कारण इमली छापर से भुट्टा चैक तक आये दिन सड़क पर जाम लग रहें हैं जिससे आम राहगीरों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ड्राइवरों के द्वारा आये दिन मनमाने तरीके से सड़क मे वाहनों को गलत साईड से निकलना या खड़ा कर देना आम बात हो गई है और जिसके कारण सड़क में जाम की स्थिति बन रही है जाम की समस्या को देखते हुए एसईसीएल कुसमुंडा प्रबंधन और कुसमुंडा पुलिस के संयुक्त प्रयास से सड़क पर क्रांक्रीट वाल बेरीकेडिंग लगाया गया था ताकी भारी वाहनों की मनमानी पर लगाम लग सके लेकिन वह भी असफ्ल दिखाई पड़ रहा है। सड़क पर जाम की समस्या को देखते हुए कुसमुंडा पुलिस द्वारा चालानी कार्यवाही करने हिदायत दी गई थी और एसईसीएल कुसमुंडा प्रबंधन के द्वारा रोड सेल के वाहनों को ब्लैक लिस्ट करनी की बात कही गई थी फिर भी वाहन चालकों की मनमानी बदस्तूर जारी हैं और सड़क पर जहाँ मर्जी वाहनों को मनमाने ढंग से खड़ा कर रहे हैं अब देखने वाली बात है की मनमाने ढंग से खड़ा करने वाले वाहन चालकों पर क्या कुसमुंडा पुलिस कार्यवाही करती है और एसईसीएल कुसमुंडा प्रबंधन ऐसे वाहनों को ब्लैक लिस्टेड करेगी।

केदारनाथ में पहले दिन 30 हजार से ज्यादा श्रद्धालुओं ने किए दर्शन

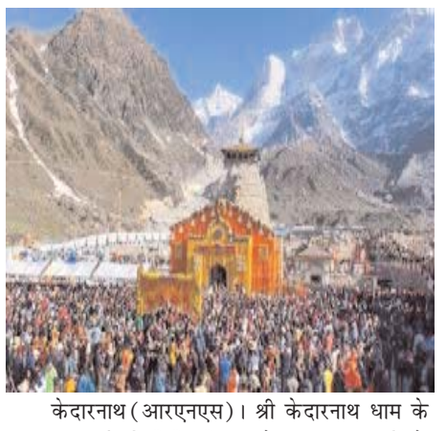

केदारनाथ(आरएनएस)। श्री केदारनाथ धाम के कपाट 2 मई को विधि-विधान के साथ श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए। कपाट खुलने के बाद पहले ही दिन (शुक्रवार को) दर्शनों को लेकर श्रद्धालुओं का भारी उत्साह देखने को मिला। पहले दिन रिकॉर्ड 30,154 तीर्थ यात्रियों ने बाबा केदार के दर्शन किए। जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी से प्राप्त जानकारी के अनुसार शाम 7 बजे तक 19,196 पुरुष, 10,597 महिलाएं और 361 बच्चों सहित कुल 30,154 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए।

कपाट खुलने के साथ ही केदारनाथ धाम में भक्तों का तांता लग गया। 'हर हर महादेव' के जयकारों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। जिला प्रशासन, पुलिस विभाग, मंदिर समिति, तीर्थ पुरोहित समाज, स्थानीय व्यापारियों और स्वयंसेवी संगठनों ने मिलकर यात्रा को सुचारू और सुरक्षित बनाने के लिए चाक-चौबंद इंतजाम किए हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए सभी जरूरी प्रबंध किए गए हैं। केदारनाथ धाम, चारधाम यात्रा का अहम हिस्सा है। हर वर्ष यहां भारी संख्या में श्रद्धालु आकर बाबा केदार के दर्शन करते हैं। इस वर्ष यात्रा के पहले ही दिन श्रद्धालुओं में जो उत्साह देखने को मिला है, उससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि आने वाले दिनों में श्रद्धालुओं की संख्या में भारी वृद्धि देखने को मिल सकती है।बता दें कि शुक्रवार को केदारनाथ धाम के कपाट विधि-विधान और पूजा-अर्चना के साथ भक्तों के लिए खोल दिए गए। श्रद्धालु अब अगले छह महीनों तक बाबा केदार के दर्शन कर पाएंगे। शुक्रवार सुबह 7 बजे शुभ मुहूर्त में विश्व प्रसिद्ध श्री केदारनाथ धाम के कपाट विधि-विधान और मंत्रोच्चार के साथ खोले गए। मंदिर के कपाट खुलते ही हेलीकॉप्टर से श्रद्धालुओं पर पुष्प वर्षा की गई। कपाट खुलते समय आर्मी बैंड ने मधुर धुनें बजाईं। इस दौरान केदारनाथ घाटी श्रद्धालुओं के जयकारों से गूंज उठी। इस अवसर पर उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी समेत प्रमुख अधिकारी मौजूद रहे।

मौसम का मिजाज बदलने की चेतावनी दी गई वैज्ञानिक ने कुछ कुछ स्थानों पर तेज अंधड़ के साथ वज्रपात होने की चेतावनी

रायपुर,(आरएनएस)। मौसम का मिजाज फिर से बदलने की चेतावनी विभाग ने दी है। मौसम विभाग के वैज्ञानिक डॉ. चंद्रा के अनुसार एक द्रोणिका राजस्थान छत्तीसगढ़, झारखंड होते हुए जा रही है इससे कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा एवं गरज चमक के साथ छीटें पड़ने की संभावना है।

मौसम विभाग के अनुसार कल चार मई को कई स्थानों पर हल्की वर्षा एवं वज्रपात होने की चेतावनी दी गई है। ज्ञात रहे गत दिवस तेज अंधड़ चलने के कारण कई स्थानों पर झाड़ गिर गये तथा फ्लैक्स उड़ गये हैं। विद्युत की आंखमिचौली के कारण आधी रात तक बिजली नहीं आई है जिससे लोग परेशान होते रहे। कई मोहल्लों में नल नहीं खुला है इसकी शिकायत महापौर एवं पार्षद तथा विधायकों से लोगों ने की है।

राजधानी में इस समय भीषण गर्मी पड़ रही है। नल शुरू होते ही बिजली बंद कर देने से लोग परेशान है इस समय यह कार्य कई वार्डों में शुरू कर दिया गया है अधिकारियों के अनुसार यह प्रयोग सफल रहा तो भविष्य में अन्य वार्डों में लागू किया जाएगा। महापौर ने इसका विरोध किया है लेकिन इसके बावजूद अधिकारी नहीं मान रहे हैं।

सीमा हैदर की पाकिस्तान वापसी की मांग तेज, जिस वकील ने दिया था साथ वही बोले- 'भेजो पाकिस्तान'

नोएडा(आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान से अवैध तरीके से भारत आई सीमा हैदर एक बार फिर सुर्खियों में हैं। इस हमले और भारत सरकार के पाकिस्तान के प्रति बदले हुए सख्त रुख के बाद सीमा हैदर को वापस उनके देश भेजने की मांग एक बार फिर जोर पकड़ने लगी है। हैरान करने वाली बात यह है कि अब खुद सीमा हैदर के पूर्व वकील हेमंत पाराशर ने भी उन्हें वापस पाकिस्तान भेजने की मांग कर दी है।सीमा हैदर और सचिन मीणा की जमानत कराने वाले वकील हेमंत पाराशर ने एक मीडिया बातचीत में कहा कि पाकिस्तान हमारा दुश्मन देश है और सीमा हैदर उसी दुश्मन देश की नागरिक है, जो अवैध तरीके से भारत में दाखिल हुई है। ऐसे में उन्हें तुरंत डिपोर्ट किया जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि अगर सीमा मां भी बन गई है, तब भी उन्हें डिपोर्ट करने में कोई कानूनी अड़चन नहीं आएगी। सरकार चाहे तो उनके खिलाफ चल रहे मुकदमे को स्थगित कर उन्हें वापस भेज सकती है।पाराशर ने दावा किया कि पहले भले ही पाकिस्तान से आकर भारत में मां बनने वाली महिला को नागरिकता मिल जाती हो, लेकिन अब कानून बदल गया है। इसलिए सीमा हैदर को किसी भी सूरत में भारत की नागरिकता नहीं मिलेगी। उन्होंने सीमा के मौजूदा वकील एपी सिंह के इस दावे पर भी सवाल उठाया कि सीमा के दस्तावेज गृह मंत्रालय और एटीएस के पास जमा हैं। पाराशर ने कहा कि अगर दस्तावेज जमा हैं तो उन्हें सार्वजनिक किया जाना चाहिए, जबकि हकीकत यह है कि उनके कोई दस्तावेज जमा नहीं हैं और न ही नागरिकता मिलेगी। बता दें कि एक तरफ जहां सीमा हैदर को वापस भेजने की मांग उठ रही है, वहीं पिछले 10-11 दिनों से सीमा हैदर खुद इस मामले में पूरी तरह खामोश हैं। उनके सोशल मीडिया अकाउंट पर भी कोई गतिविधि नहीं दिख रही है। दूसरी ओर, उनके मौजूदा वकील एपी सिंह लगातार सीमा को वापस न भेजने की वकालत कर रहे हैं। उनका तर्क है कि सीमा का मामला कोर्ट में लंबित है, सारे दस्तावेज सरकारी एजेंसियों के पास हैं, वह जमानत की शर्तों का पालन कर रही हैं, और हाल ही में उन्होंने भारत में एक बच्ची को जन्म दिया है।पहलगाम हमले के बाद भारत सरकार द्वारा पाकिस्तान के खिलाफ उठाए जा रहे कड़े कदमों के बीच, सीमा हैदर का मामला एक बार फिर संवेदनशील बन गया है, और अब उनके पूर्व वकील की मांग ने इस बहस को और हवा दे दी है।

संदीपा धर ने इंस्टाग्राम पर शेयर किया हॉट फोटोशूट, बालकनी में दिए किलर पोज

अभिनेत्री संदीपा धर एक बार फिर अपने स्टनिंग लुक्स को लेकर सुर्खियों में हैं. हाल ही में उन्होंने इंस्टाग्राम पर अपना लेटेस्ट फोटोशूट शेयर किया है जिसमें वह बालकनी में बेहद ग्लैमरस और बोल्ड अंदाज़ में पोज़ देती नजर आ रही हैं. इस फोटोशूट में संदीपा ने क्रोशिया स्टाइल की व्हाइट ड्रेस पहनी है, जो उनके फिगर को खूबसूरती से हाईलाइट कर रही है. खुले बाल, न्यूड मेकअप और परफेक्ट लाइटिंग ने उनके लुक को और भी ज्यादा आकर्षक बना दिया है.

इस ग्लैमरस अवतार में संदीपा ने 'जब वे कहते हैं कि आकस्मिक, लेकिन आप समझ गए कि सेवा' कैप्शन के साथ तस्वीरें शेयर की हैं. इस फोटोशूट को रचित वोरा ने शूट किया है, मेकअप किया है एलिशा बी ने और स्टाइलिंग श्रु बिड़ला ने की है.

संदीपा की इन तस्वीरों पर फैंस दिल खोलकर प्यार लुटा रहे हैं. किसी ने उन्हें 'गॉर्जियस' कहा तो किसी ने उनके लुक को 'फायर' बताया. 24 घंटे के भीतर इस पोस्ट को 74,000 से ज्यादा लाइक्स मिल चुके हैं और कमेंट्स की बाढ़ आ गई है. एक्टिंग के साथ-साथ संदीपा अपने बोल्ड और फैशनेबल लुक्स के लिए भी जानी जाती हैं. यह फोटोशूट इस बात का एक और बेहतरीन उदाहरण है कि वह कैसे हर लुक को आत्मविश्वास के साथ कैरी करती हैं.

रेड 2 की बॉक्स ऑफिस पर बेहतरीन शुरुआत, पहले दिन की कमाई के आंकड़े आए सामने

काफी समय से अजय देवगन फिल्म रेड 2 को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। उनकी यह फिल्म आखिरकार लंबे इंतजार के बाद 1 मई को सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है।फिल्म को समीक्षकों के साथ-साथ दर्शकों की तरफ से भी हरी झंडी मिली, वहीं सिनेमाघरों में दस्तक देते ही इसने तहलका मचा दिया है।फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार शुरुआत की है।

आइए जानें फिल्म ने ओपनिंग डे पर कितने करोड़ रुपये कमाए।बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, रेड 2 ने पहले दिन 18.25 करोड़ रुपये का कारोबार किया। हालांकि, ये शुरुआती आंकड़े हैं और आधिकारिक आंकड़े सामने आने के बाद उनमें थोड़ा बहुत फेरबदल हो सकता है।ट्रेड पंडितों का मानना है कि वीकेंड पर फिल्म की कमाई में बढ़ोतरी हो सकती है।बता दें कि रेड 2 का बजट करीब 50 करोड़ रुपये बताया जा रहा है। इस हिसाब से फिल्म का ओपनिंग डे कारोबार शानदार माना जाएगा।रेड 2 के निर्देशन की कमान राज कुमार गुप्ता ने संभाली है। इसमें अजय की जोड़ी वाणी कपूर के साथ बनी है, वहीं रितेश देशमुख ने भी फिल्म में अहम भूमिका निभाई है।

केसरी वीर अभिनेत्री आकांक्षा शर्मा ने बताया कि रामलीला ने उनके अभिनय सफर को कैसे प्रभावित किया

बहुप्रतीक्षित ऐतिहासिक एक्शन ड्रामा केसरी वीर से अभिनय की दुनिया में कदम रखने जा रहीं आकांक्षा शर्मा ने बताया कि रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण अभिनीत संजय लीला भंसाली की रामलीला ने एक अभिनेता के रूप में उनके सफर को कैसे प्रभावित किया।

आकांक्षा ने बताया, मैं एक बहुत ही साधारण पृष्ठभूमि से आती हूं, जिसका कोई भी फिल्मी कनेक्शन नहीं है। मैं 12वीं कक्षा में थी और अपनी बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी कर रही थी, तभी मैंने रामलीला देखी - और इसने सब कुछ बदल दिया। तभी मुझे एहसास हुआ कि मैं एक अभिनेत्री बनना चाहती हूं। मैं इस सपने के साथ बड़ी नहीं हुई, लेकिन फिल्म देखने से मेरे अंदर कुछ जग गया। और अब, मैं अपनी पहली फिल्म के साथ यहां हूं। मैं खुद को बहुत भाग्यशाली और आभारी महसूस करती हूं कि मुझे राजल का किरदार निभाने का मौका मिला - एक ऐसा किरदार जिसकी लड़ाई सिर्फ युद्ध के मैदान में नहीं थी, बल्कि अंदर भी थी।

केसरी वीर पवित्र सोमनाथ मंदिर को हमलावर ताकतों से बचाने के लिए हुए महायुद्ध की कहानी है। अनुभवी योद्धा वेगड़ा जी (सुनील शेट्टी) अपनी मातृभूमि के अडिग रक्षक के रूप में खड़े हैं, बहादुर युवा राजपूत राजकुमार हमीरजी गोहिल (सूरज पंचोली) के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं, और दुर्जेय ज़फ़र खान (विवेक ओबेरॉय) से लोहा ले रहे हैं।युद्ध के बीच में, हमीरजी को सुंदर राजल (आकांशा शर्मा) के साथ अपने उभरते रोमांस में सांत्वना मिलती है।चौहान स्टूडियोज के बैनर तले कनु चौहान द्वारा निर्मित, केसरी वीर 16 मई, 2025 को दुनिया भर के दर्शकों को लुभाने के लिए तैयार है।इसके बाद आकांक्षा तेरा यार हूं मैं में नजर आएंगी, जिसमें उनके साथ अमन इंद्र कुमार भी होंगे। मिलाप जावेरी के निर्देशन में बनी यह फिल्म दोस्ती और रिश्तों के इर्द-गिर्द घूमती है।

उनकी लाइनअप में एक अनटाइटल्ड एक्शन-कॉमेडी भी शामिल है, जिसे जावेरी ही डायरेक्ट करेंगे। अपनी अगली फिल्म को लेकर उत्साहित आकांक्षा ने कहा कि वह अपने सपने को जीने और अद्भुत टीमों के साथ इस तरह के रोमांचक प्रोजेक्ट पर काम करने के लिए बेहद आभारी हैं।

बॉक्स ऑफिस पर हिट 3 की जबरदस्त कमाई, नानी के करियर की दूसरी सबसे बड़ी ओपनर बनी

दक्षिण भारतीय सिनेमा के जाने-माने अभिनेता नानी फिल्म हिट 3: द थर्ड केस को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। उनकी यह फिल्म रेड 2 और द भूतनी के साथ 1 मई को सिनेमाघरों में दस्तक दे चुकी है।इस फिल्म को दर्शकों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली, वहीं समीक्षकों ने भी नानी के अभिनय की सराहना की।फिल्म की बॉक्स ऑफिस पर शुरुआत बेहद दमदार रही है। आइए जानें हिट 3 ने पहले दिन कितने करोड़ रुपये कमाए।बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, हिट पहले दिन 18 करोड़ रुपये जुटाने में सफल रही। हालांकि, आधिकारिक आंकड़े सामने आने के बाद उनमें थोड़ा बहुत फेरबदल हो सकता है।फिल्म ने तेलुगू भाषा में 17.25 करोड़ रुपये, तमिल भाषा में 35 लाख रुपये, कन्नड़ भाषा में 5 लाख रुपये, हिंदी भाषा में 25 लाख रुपये और मलयालम भाषा में 10 लाख रुपये का कारोबार किया।वीकेंड पर फिल्म की कमाई में और उछाल देखने को मिल सकता है। हिट 3 18 करोड़ रुपये के साथ नानी के करियर की दूसरी सबसे बड़ी ओपनर बनी है। इस फिल्म ने सारिपोधा सानिवारम का पछाड़ दिया है, जिसने पहले दिन 9 करोड़ रुपये का कारोबार किया।बता दें कि नानी की सर्वोच्च ओपनर का रिकॉर्ड दशहरा के नाम पर दर्ज है, जिसने भारत में 23.2 करोड़ से खाता खोला था।

इस फिल्म में नानी के साथ अभिनेत्री श्रीनिधि शेट्टी नजर आ रही हैं। शैलेश कोलानू इस फिल्म के निर्देशक हैं।

बॉक्स ऑफिस पर द भूतनी ने नहीं दिखाया कमाल, पहले दिन की कमाई जान लगेगा झटका

संजय दत्त पिछली बार तेलुगू फिल्म डबल इस्मार्ट में नजर आए थे। हालांकि, बॉक्स ऑफिस पर उनकी यह फिल्म बुरी तरह फ्लॉप हुई।अब संजू बाबा द भूतनी नाम की एक हॉरर कॉमेडी फिल्म लेकर दर्शकों के बीच हाजिर हो चुके हैं। यह फिल्म 1 मई को अजय देवगन की रेड 2 के साथ सिनेमाघरों में रिलीज हुई। फिल्म को समीक्षकों के साथ-साथ दर्शकों की तरफ से मिली-जुली प्रतिक्रिया मिली, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर इसकी शुरुआत बेहद खराब रही है।अब द भूतनी की कमाई के पहले दिन के आंकड़े सामने आ गए हैं, जो बहुत निराशाजनक हैं। पहले दिन ही फिल्म का कारोबार लाखों में सिमट गया है।बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, द भूतनी ने पहले दिन केवल 65 लाख रुपये कमाए। हालांकि, यह केवल शुरुआती आंकड़े हैं और आधिकारिक आंकड़े सामने आने के बाद इनमें थोड़ा-बहुत बदलाव हो सकता है।गौरतलब है कि फिल्म का बजट 25 करोड़ रुपये बताया जा रहा है।द भूतनी के निर्देशन सिद्धांत सचदेव हैं। इस हॉरर कॉमेडी फिल्म में मौनी रॉय भी मुख्य भूमिका में हैं। पलक तिवारी और सनी सिंह ने भी इस फिल्म में अपनी अदाकारी का तडका लगाया है।फिल्म में संजय की अदाकारी की तारीफ हो रही है, वहीं कॉमेडी पंच भी अच्छे हैं, लेकिन कहानी किसी को कुछ खास पसंद नहीं आई हैं। बॉक्स ऑफिस पर द भूतनी का सामना रेड 2, केसरी 2 और जाट से हो रहा

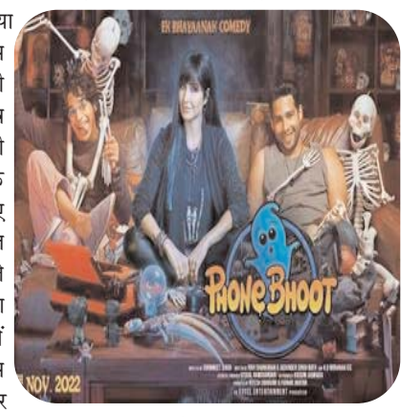

सुनील शेट्टी, विवेक ओबेरॉय, सूरज पंचोली की पीरियड ड्रामा केसरी वीर का ट्रेलर रिलीज, 16 मई को होगी सिनेमाघरों में रिलीज

सुनील शेट्टी, विवेक ओबेरॉय और सूरज पंचोली स्टारर पीरियड ड्रामा फिल्म केसरी वीर का ट्रेलर रिलीज हो गया है. फिल्म 16 मई 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देने जा रही है. पैनोरमा स्टूडियोज़ और चौहान स्टूडियोज़ के बैनर तले बनी इस फिल्म का निर्देशन प्रिंस धीमान ने किया है और कहानी कणुभाई चौहान ने लिखी है. ट्रेलर में देशभक्ति, बलिदान और युद्ध के भाव देखने को मिलते हैं, लेकिन कुछ सीन में इमोशनल वज़न की कमी महसूस होती है. वीएफएक्स का अधिक प्रयोग किया गया है जो कई जगहों पर कमजोर और कृत्रिम दिखता है.

ट्रेलर के स्केल को भव्य दिखाने की कोशिश की गई है, लेकिन कुछ युद्ध दृश्य अपेक्षा के अनुसार प्रभावशाली नहीं लगे. हालांकि यह सिर्फ ट्रेलर है, फिल्म में सिनेमैटोग्राफी, बैकग्राउंड म्यूजिक और परफॉर्मेंस से चीजें बेहतर साबित हो सकती हैं.

फिल्म का संगीत मोंटी शर्मा ने दिया है और सिनेमैटोग्राफी विकास जोशी की है. केसरी वीर की रिलीज से पहले निर्माताओं ने इसकी मार्केटिंग तेज कर दी है और यह फिल्म पीरियड वार ड्रामा शैली के दर्शकों को आकर्षित करने की पूरी कोशिश कर रही है. क्या केसरी वीर सिनेमाघरों में उम्मीदों पर खरा उतर पाएगी या ट्रेलर जैसा रिस्पॉन्स ही इसके बॉक्स ऑफिस पर असर डालेगा? इसका जवाब 16 मई को मिलेगा जब फिल्म बड़े पर्दे पर रिलीज होगी.

रेड 2 के दस्तक देते ही केसरी 2 की कमाई में गिरावट, जानें 14वें दिन कारोबार

अक्षय कुमार की फिल्म केसरी 2 को बीते 18 अप्रैल को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था। जलियांवाला बाग हत्याकांड के दर्द को बयां करती यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर पहले दिन से ही अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

पिछले कुछ दिनों से फिल्म के कारोबार में गिरावट लगातार जारी है और अब रेड 2 के दस्तक देते ही केसरी 2 की कमाई की रफ्तार और धीमी हो गई है।

आइए जानें फिल्म ने 14वें दिन कितने करोड़ रुपये कमाए।सैकनिल्क के मुताबिक, केसरी 2 ने अपनी रिलीज के 14वें दिन यानी पहले गुरुवार को 1.80 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 74.75 करोड़ रुपये हो गया है।दुनियाभर में इस फिल्म ने 100 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार कर लिया है। आर माधवन और अनन्या पांडे पर फिल्म का हिस्सा हैं।

केसरी 2 के निर्देशन की कमान करण सिंह त्यागी ने संभाली है, वहीं करण जौहर इस फिल्म के निर्माता हैं।

गर्मियों के दौरान महिलाएं इस तरह से करें आंखों का मेकअप, नहीं होगा खराब

गर्मियों में मेकअप करना थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर जब बात आंखों के मेकअप की हो। पसीने और उमस के कारण आईलाइनर और मस्कारा अक्सर फैल जाते हैं और आंखों का मेकअप बिगड़ जाता है। इसलिए आज हम आपको कुछ ऐसे टिप्स और तरीके बताएंगे, जिन्हें अपनाकर महिलाएं गर्मियों के दौरान भी बेहतरीन आई मेकअप कर सकती हैं और उनकी आंखों का मेकअप पूरे दिन सही बना रहेगा। आइए इनके बारे में जानते हैं।

प्राइमर का करें इस्तेमाल

आंखों का प्राइमर लगाना बहुत जरूरी है क्योंकि यह आईशैडो और आईलाइनर को लंबे समय तक टिकाए रखने में मदद करता है।प्राइमर आंखों की त्वचा को समतल बनाता है और एक बेस तैयार करता है, जिससे आईशैडो आसानी से लग सके।

इसके अलावा यह पसीने और नमी से भी बचाता है। प्राइमर लगाने से आपका आई मेकअप पूरे दिन सही बना रहता है और आपको बार-बार ठीक करने की जरूरत नहीं पड़ती।

हल्के रंगों का करें चयन

गर्मियों में हल्के रंगों का आईशैडो चुनना सबसे अच्छा होता है।हल्के गुलाबी, नीला या हरा जैसे रंग आपकी आंखों पर बहुत अच्छे लगते हैं और उन्हें ताजगी भरा लुक देते हैं।

इन रंगों से आपकी आंखें चमकदार दिखेंगी और चेहरे पर एक निखार आएगा। हल्के रंगों का चयन करने से आपका आई मेकअप भी कम भारी लगेगा और आप पूरे दिन आरामदायक महसूस करेंगी।इसके अलावा ये रंग गर्मियों की उमस को भी कम दिखाते हैं।पानी से बचाने वाले आईलाइनर और मस्कारा लगाएंपानी से बचाने वाले आईलाइनर और मस्कारा आपके आई मेकअप को पसीने और नमी से बचाते हैं।ये लंबे समय तक टिके रहते हैं और फैलते नहीं। पानी से बचाने वाले आईलाइनर का इस्तेमाल करने से आपकी आंखें पूरे दिन एकदम सही दिखती हैं।इसी तरह पानी से बचाने वाला मस्कारा आपकी पलकों को भी गीलेपन से बचाता है और उन्हें झड़ने से रोकता है।इस प्रकार ये दोनों उत्पाद आई मेकअप को लंबे समय तक सही बनाए रखते हैं।

हल्का ब्लश लगाएं

आंखों का मेकअप पूरा करने के लिए हल्का ब्लश लगाना न भूलें। यह आपके चेहरे को ताजगी भरा लुक देगा और आपकी आंखों का मेकअप भी अच्छा दिखेगा।

आप हल्का गुलाबी या पीच रंग का ब्लश चुन सकती हैं, जो गर्मियों के मौसम के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। इससे आपका चेहरा निखरा हुआ लगेगा और आपको पूरे दिन आरामदायक महसूस होगा।

इस प्रकार हल्का ब्लश लगाने से आपका पूरा लुक और भी आकर्षक और ताजगी भरा दिखेगा।

सेटिंग स्प्रे का करें इस्तेमाल

आंखों का मेकअप सेट करने के लिए सेटिंग स्प्रे का इस्तेमाल करें। यह आपके आई मेकअप को लंबे समय तक टिकाए रखने में मदद करेगा और उसे खराब होने से रोकेगा।सेटिंग स्प्रे लगाने से आपका आई मेकअप तरोताजा दिखेगा और आपको बार-बार ठीक करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

इस प्रकार इन सरल टिप्स और तरीकों को अपनाकर महिलाएं गर्मियों के दौरान भी बेहतरीन आई मेकअप कर सकती हैं।

अधोमुखासनः हर दिन करें ये योगासन, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मिलेंगे कई लाभ

अधोमुखासन एक ऐसा योगासन है, जो शरीर को स्थिरता का पाठ पढ़ाता है। यह आसन न केवल शारीरिक संतुलन को बढ़ाता है, बल्कि मानसिक शांति भी प्रदान करता है।इसके नियमित अभ्यास से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है और मानसिक शांति मिलती है।आइए इस आसन को सही तरीके से करने का तरीका और इसके फायदे जानते हैं।

अधोमुखासन करने का तरीका

सबसे पहले जमीन पर पैरों को फैलाकर बैठ जाएं।अब दोनों हथेलियों को जमीन पर रखें और माथे को भी जमीन पर टिका दें।इस स्थिति में शरीर का भार सिर और हथेलियों पर डालकर पीठ को ऊपर की ओर उठाएं। इस दौरान पैरों को सीधा रखें और एड़ियों को जमीन से सटाने की कोशिश करें।कुछ देर इसी अवस्था में बने रहने के बाद धीरे-धीरे सामान्य हो जाएं।

अभ्यास के दौरान बरतें ये सावधानियां

अगर आपको गर्दन, पीठ या कंधे में कोई परेशानी है तो इस आसन को न करें।

गर्भवती महिलाओं को भी यह आसन नहीं करना चाहिए।ज्यादा रक्तचाप, सिरदर्द, पेट की समस्या या दिल की बीमारी वाले लोगों को भी इस आसन से बचना चाहिए।अगर आप किसी गंभीर बीमारी से जूझ रहे हैं तो इस आसन का अभ्यास डॉक्टर की सलाह के बाद ही करें।अभ्यास के दौरान शरीर को अधिक न खींचे और जल्दबाजी भी न करें।

अधोमुखासन के नियमित अभ्यास से मिलने वाले फायदे

अधोमुखासन से रीढ़ की हड्डी, कूल्हे और कंधों में खिंचाव आता है। यह आसन शरीर की मांसपेशियों को मजबूत बनाने में मदद करता है।अधोमुखासन से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है और मानसिक शांति मिलती है।यह आसन पाचन क्रिया को भी सुधारता है। इसके नियमित अभ्यास से शरीर का संतुलन बेहतर होता है।अधोमुखासन से रक्त संचार भी बेहतर होता है। यह आसन तनाव से राहत दिलाने में भी सहायक है।

अधोमुखासन के अभ्यास से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें

अधोमुखासन करते समय सांसों पर ध्यान दें और गहरी सांस लें।

अगर आप इस स्थिति में लंबे समय तक नहीं रह पा रहे हैं तो धीरे-धीरे समय बढ़ाएं।

दिन में दो बार अधोमुखासन का अभ्यास करें ताकि इसके फायदे मिल सकें।

इस आसन को करते समय शरीर में किसी प्रकार का दर्द महसूस होने पर इसे करना बंद कर दें और डॉक्टर से संपर्क करें।

सिंधु नदी का पानी रोकने पर पाकिस्तान की गीदड़भभकी, रक्षा मंत्री बोले- डैम बनाया तो नष्ट कर देंगे

इस्लामाबाद (ए.)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव लगातार गहराता जा रहा है। भारत द्वारा पाकिस्तान के खिलाफ उठाए गए कड़े कदमों, जिनमें सिंधु जल संधि (स्रोत के अनुसार) या सिंधु नदी के पानी को लेकर अपनाया गया सख्त रुख भी शामिल है, से पाकिस्तान में खलबली मच गई है। भारत सरकार द्वारा कथित तौर पर सिंधु नदी का एक भी बूंद पानी पाकिस्तान न भेजने के फैसले (स्रोत के अनुसार संधि को रोकने के कदम) ने पड़ोसी देश को बौखला दिया है, जिसके बाद पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने भारत को सीधी धमकी दी है।

पाकिस्तानी रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने एक इंटरव्यू के दौरान बेहद भड़काऊ बयान देते हुए कहा कि पाकिस्तान को दिए जाने वाले सिंधु नदी के पानी को रोकना 'आक्रामकता' माना जाएगा। जब मंत्री से यह पूछा गया कि यदि भारत सिंधु बेसिन पर कोई बांध बनाकर पानी रोकने की तैयारी करता है, तो पाकिस्तान की क्या प्रतिक्रिया होगी, इस पर ख्वाजा आसिफ ने कहा, यह पाकिस्तान के खिलाफ आक्रामकता होगी। हमला सिर्फ तोपों और गोलियों से ही नहीं होता, पानी को रोकना या मोड़ना भी पाकिस्तान पर हमला ही है। उन्होंने आगे धमकी देते हुए कहा, अगर उन्होंने (भारत ने) इस तरह का कोई प्रयास किया, तो पाकिस्तान उस स्ट्रक्चर को नष्ट कर देगा।

गौरतलब है कि यह बढ़ा हुआ तनाव 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पैदा हुआ है, जिसमें लश्कर ए तैयबा के मुखौटा संगठन 'द रेसिस्टेंस फ्रंट' (TRF) के आतंकवादियों ने 26 पर्यटकों की बेरहमी से हत्या कर दी थी। इस हमले के बाद से ही दोनों देशों के रिश्तों में कड़वाहट आई है। भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कई सख्त कदम उठाए हैं। बड़ी संख्या में पाकिस्तान से संचालित होने वाले सोशल मीडिया अकाउंट्स पर प्रतिबंध लगाया गया है। इसके अलावा, शनिवार से भारत ने पाकिस्तान के लिए सभी डाक और पार्सल सेवाओं को भी पूरी तरह से रोक दिया है।

जेल में पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान का हुआ रेप!, मेडिकल रिपोर्ट हुई वायरल

इस्लामाबाद (ए)। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को लेकर सोशल मीडिया पर खबर खूब वायरल हो रही है। इसमें दावा किया गया है कि जेल में बंद इमरान खान यौन शोषण का शिकार हुए है। टविटर (एक्स) पर पाकिस्तानी न्यूज वेबसाइट डॉन की एक खबर को साझा किया जा रहा है।

ट्विटर पर मेडिकल रिपोर्ट भी शेयर की गई है। एक एक्स हैंडल ने लिखा है,इमरान खान के साथ पाकिस्तानी सेना के मेजर ने बलात्कार किया है। पाकिस्तान के कैदियों में पुरुषों के खिलाफ यौन हिंसा काफी आम है। वे ऐसा व्यक्ति के गौरव और गरिमा को छीनने के लिए करते हैं। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, मार्च महीने में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के स्वास्थ्य के बारे में रिपोर्ट आने के बाद पाकिस्तानी डॉक्टरों की एक टीम ने उनका मेडिकल चेक-अप करने के लिए अदियाला जेल का दौरा किया था। डॉन ने बताया था कि चेकअप 30 मिनट तक चला। रिपोर्ट तुरंत जारी नहीं की गई थी इमरान खान की पार्टी पीटीआई के एक अन्य नेता ने दावा किया था कि खान को उनकी बहनों या अन्य रिश्तेदारों से मिलने की भी अनुमति नहीं दी जा रही है।

भारत की एक और डिजिटल स्ट्राइक, पाकिस्तानी पीएम शहबाज शरीफ का यूट्यूब चैनल ब्लॉक

इस्लामाबाद, (ए)। भारत ने शुक्रवार को पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के आधिकारिक यूट्यूब अकाउंट को ब्लॉक कर दिया। शरीफ का चैनल अब तक का सबसे हाई-प्रोफाइल सोशल मीडिया अकाउंट है, जिसे भारत सरकार ने ब्लॉक किया। शहबाज शरीफ के ब्लॉक किए गए प्रोफाइल में लिखा है, राष्ट्रीय सुरक्षा या सार्वजनिक व्यवस्था से संबंधित सरकार के आदेश के कारण यह कंटेंट फिलहाल इस देश में उपलब्ध नहीं है। सरकार की तरफ से हटाए जाने के अनुरोधों के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया गूगल पारदर्शिता रिपोर्ट देखें।

भारत सरकार इससे पहले पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ के एक्स अकाउंट को ब्लॉक कर चुकी है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद सरकार ने पाकिस्तान से आने वाली गलत सूचनाओं और भारत विरोधी दुष्प्रचार का मुकाबला करने के लिए अपनी कोशिशें तेज कर दी हैं। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने कई पाकिस्तानी यूट्यूब चैनलों और सोशल

मीडिया अकाउंट्स को ब्लॉक करने का आदेश दिया है, जो भारत की संप्रभुता और सार्वजनिक व्यवस्था को कमजोर करने के उद्देश्य से भ्रामक सामग्री प्रसारित करते हैं। ये कार्रवाई हमले के बाद गलत सूचना के प्रसार को रोकने के लिए एक व्यापक रणनीति का हिस्सा है। ब्लॉक किए गए प्रमुख यूट्यूब चैनलों में पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर शोएब अख्तर, पत्रकार आरजू काजमी और कमेंटेटर सैयद मुज्जमिल शाह के चैनल शामिल हैं। ओलंपियन अरशद नदीम का इंस्टाग्राम अकाउंट और पूर्व क्रिकेटर शाहिद अफरीदी के यूट्यूब अकाउंट भी सस्पेंड किए गए हैं। 30 अप्रैल को, प्रमुख पाकिस्तानी अभिनेत्रियों हनिया आमिर और माहिरा खान के इंस्टाग्राम प्रोफाइल को ब्लॉक कर दिया गया। बता दें, आतंकियों ने 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल - पहलगाम स्थित बैसरन घाटी में लोगों (ज्यादातर पर्यटक) पर अंधाधुंध गोलियां चला दी थीं। हमले में 26 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। प्रतिबंधित आतंकवादी समूह 'लश्कर-ए-तैयबा' से जुड़े 'टीआरएफ' ने इस हमले की जिम्मेदारी ली। पहलगाम हमले के बाद भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया है। नई दिल्ली ने इस्लामाबाद के खिलाफ कई सख्त कूटनीतिक और रणनीतिक कदम उठाए हैं।

कैलिफोर्निया के कॉलेज में अज्ञात ने की फायरिंग, 2 महिलाएं घायल

इंगलवुड,(ए)। अमेरिका के दक्षिणी कैलिफोर्निया के एक कॉलेज में अचानक फायरिंग होने लगी। गोली 2 महिलाओं को लगी, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जिनमें से एक ही हालत काफी गंभीर है। इंगलवुड के मेयर के मुताबिक यह घटना शुक्रवार शाम की है। स्पार्टन कॉलेज ऑफ एयरोनॉटिक्स एंड टेक्नोलॉजी परिसर में अचानक गोलीबारी शुरू हो गई। घटना में 2 महिलाओं को गोली लगी। गोलीबारी किसने चलाई? इसकी जानकारी अभी नहीं मिल सकी है। प्रशासन को यकीन नहीं हो रहा है कि आरोपी कॉलेज में ही कहीं छिपा है। पुलिस ने कॉलेज के सभी कमरों की जांच की। लेकिन अभी तक आरोपी का पता नहीं चला है। बता दें यह फायरिंग कॉलेज के ऑफिस में हुई। ऐसे में पुलिस को शक है कि इसके पीछे किसी कर्मचारी का हाथ हो सकता है। यह कार्यस्थल पर हिंसा की घटना है। घायल महिलाएं भी कॉलेज की कर्मचारी हैं। ऐसे में मुमकिन है कि किसी पूर्व कर्मचारी ने इस घटना को अंजाम दिया हो। फायर विभाग ने घटना की जानकारी देते हुए कहा कि गोली लगने के कारण दोनों महिलाओं को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इनमें से एक महिला की हालत बेहतर है, लेकिन दूसरी की हालत गंभीर है। बता दें स्पार्टन कॉलेज ऑफ एयरोनॉटिक्स एंड टेक्नोलॉजी की पूरे अमेरिका में कई शाखाएं हैं। कॉलेज की इंगलवुड स्थित शाखा में 500 के आसपास बच्चे पढ़ते हैं। कॉलेज की वेबसाइट के मुताबिक यह कॉलेज विमानन रखरखाव प्रौद्योगिकी पर केंद्रित प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करता है। लॉस एंजिल्स एयरपोर्ट से इस संस्थान की दूरी महज 1.5 किलोमीटर है।

कैलिफोर्निया के कॉलेज में अज्ञात ने की फायरिंग, 2 महिलाएं घायल

इंगलवुड, (ए)। अमेरिका के दक्षिणी कैलिफोर्निया के एक कॉलेज में अचानक फायरिंग होने लगी। गोली 2 महिलाओं को लगी, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जिनमें से एक ही हालत काफी गंभीर है। इंगलवुड के मेयर के मुताबिक यह घटना शुक्रवार शाम की है। स्पार्टन कॉलेज ऑफ एयरोनॉटिक्स एंड टेक्नोलॉजी परिसर में अचानक गोलीबारी शुरू हो गई। घटना में 2 महिलाओं को गोली लगी। गोलीबारी किसने चलाई? इसकी जानकारी अभी नहीं मिल सकी है। प्रशासन को यकीन नहीं हो रहा है कि आरोपी कॉलेज में ही कहीं छिपा है। पुलिस ने कॉलेज के सभी कमरों की जांच की। लेकिन अभी तक आरोपी का पता नहीं चला है।बता दें यह फायरिंग कॉलेज के ऑफिस में हुई।

21 हजार फिट पर पायलट को दिखी उड़न तश्तरी, भारी भरकम विमान पृथ्वी पर आया

वॉशिंगटन (ए)। अमेरिका में एक यूएफओ यानी अनआइडेंटिफाइड फ्लाइंग ऑब्जेक्ट की तस्वीर सामने आने से सनसनी मच गई। दावा किया जा रहा है कि दूसरे ग्रह से यह 1000 फुट का विमान पृथ्वी पर आया। यह अमेरिका के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र के ऊपर देखा गया। तस्वीर को यूएफओ डिस्क्लोजर एक्टिविस्ट्स द्वारा वाशिंगटन डीसी में आयोजित एक साइंस, नेशनल सिक्योरिटी एंड इनोवेशन नामक पैनल डिस्कशन के दौरान पेश किया गया। तस्वीर में देखा जा सकता है कि इस उड़न तश्तरी के आकार की दिखने वाली चीज की बड़ी सी परछाई जमीन पर नजर आ रही है। यह यूएफओ असली था या नकली। इस बारे में कोई नहीं जानता। ना ही किसी को यह स्पष्ट तौर पर पता है कि यह दूसरे ग्रह की किसी उड़न तश्तरी की तस्वीर है भी या नहीं। हालांकि इसे लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म जरूर हो गया है। इस तस्वीर को पूर्व पेंटागन अधिकारी और विवादित यूएफओ रिसर्चर लुइस ल्यू एलिजोंडो ने पेश किया। उन्होंने कहा कि यह तस्वीर आज की नहीं बल्कि चार साल पहले यानी 2021 की है, जिसे एक कमर्शियल पायलेट द्वारा लिया गया है।

जब फ्लाइट करीब 21,000 फीट की ऊंचाई पर उड़ रही थी, तभी नीचे की तरफ यह यूएफओ उड़ रहा था। तस्वीर में एक चमकीला, सिल्वर रंग का डिस्कनुमा वस्तु दिखाई दी, जिसकी परछाई जमीन पर भी नजर आई। एलिजोंडो ने कहा कि उन्होंने स्वयं यह तस्वीर नहीं ली है। लिहाजा वो खुद इसकी प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं कर सकते।

खेल समाचार

वैभव सूर्यवंशी को लेकर भारत के पूर्व कोच ग्रेग चैपल की चेतावनी

नई दिल्ली (ए.)। महज 14 साल की उम्र में वैभव सूर्यवंशी ने जो करिश्मा कर दिखाया है, वह भारतीय क्रिकेट के इतिहास में एक अद्वितीय अध्याय बन गया है। आईपीएल 2025 में गुजरात टाइटंस के खिलाफ खेलते हुए वैभव ने केवल 35 गेंदों में शतक जड़कर सबको चौंका दिया। यह प्रदर्शन उन्हें आईपीएल में सबसे तेज़ शतक लगाने वाला भारतीय बल्लेबाज़ बना गया है और ओवरऑल सूची में वह दूसरे नंबर पर आ गए हैं। उनके इस अद्वितीय प्रदर्शन के बाद हर ओर उनकी चर्चा हो रही है। क्रिकेट विशेषज्ञ, फैंस, फ्रेंचाइज़ी और मीडिया सभी उनके टैलेंट की तारीफ कर रहे हैं, लेकिन इस बीच ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान और भारत के पूर्व कोच ग्रेग चैपल ने एक अहम चेतावनी दी है।

ग्रेग चैपल का मानना है कि वैभव सूर्यवंशी जैसे असाधारण प्रतिभाशाली खिलाड़ी को केवल प्रदर्शन के आधार पर नहीं, बल्कि एक मज़बूत सपोर्ट सिस्टम के साथ आगे बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने इस विषय में सचिन तेंदुलकर का उदाहरण देते हुए कहा कि सचिन को किशोरावस्था में ही जो सफलता मिली, उसके पीछे न केवल प्रतिभा थी, बल्कि उनके पास एक सुलझा हुआ पारिवारिक माहौल, अनुभवी कोच और अनुशासित सोच भी थी, जिसने उन्हें क्रिकेट के सर्कस से बचाया। वहीं, उन्होंने विनोद कांबली और पृथ्वी शॉ की असफलताओं का जिक्र

करते हुए कहा कि ये दोनों भी कम प्रतिभाशाली नहीं थे, लेकिन उनका करियर सचिन जैसा नहीं बन सका।

चैपल ने कहा कि विनोद कांबली के पास अपार प्रतिभा थी, लेकिन अनुशासन और स्थिरता की कमी के चलते वे क्रिकेट की दुनिया में ज्यादा देर टिक नहीं सके। वे शराब की लत और निजी समस्याओं में उलझते गए और उनका करियर ढलान पर चला गया। वहीं पृथ्वी शॉ, जिन्होंने बेहद कम उम्र में भारत को अंडर-19 वर्ल्ड कप जिताया था और डेब्यू टेस्ट में शतक भी जड़ा था, वे भी अनुशासन और फिटनेस जैसे मुद्दों के कारण टीम इंडिया से बाहर हो चुके हैं। आईपीएल 2025 के मेगा ऑक्शन में उन्हें कोई खरीदार तक नहीं मिला। उनके नेतृत्व में खेलने वाले शुभमन गिल और अर्शदीप सिंह आज टीम इंडिया में अहम भूमिका निभा रहे हैं, जबकि शॉ पिछड़ते जा रहे हैं।

ग्रेग चैपल ने यह भी कहा कि सूर्यवंशी जैसे युवा खिलाड़ियों की मार्केटिंग करने से पहले उनकी प्रतिभा को सुरक्षित और विकसित करने की ज़रूरत है। बीसीसीआई, आईपीएल फ्रेंचाइज़ी, मेंटोर और मीडिया सभी की जिम्मेदारी बनती है कि वे ऐसे टैलेंट को केवल प्रचार का हिस्सा न बनाएं, बल्कि उन्हें मानसिक, शारीरिक और पेशेवर तौर पर तैयार करें। उन्होंने लिखा कि प्रतिभा को रोका नहीं जा सकता, लेकिन उसे गाइड और संरक्षित जरूर किया जा सकता है। जरूरत इस बात की है कि हम उसे 'हीरो' बनाने की जल्दबाज़ी में उसका करियर न बिगाड़ें। वैभव सूर्यवंशी का भविष्य उज्ज्वल दिखता है, लेकिन चैपल की यह सलाह भारतीय क्रिकेट के लिए समय पर चेतावनी भी है कि प्रतिभा की रक्षा होनी चाहिए, न कि उसका केवल दोहन।

गुजरात ने हैदराबाद को हराकर दूसरे स्थान पर किया कब्जा, गिल और बटलर ने लगाए शानदार अर्धशतक

अहमदाबाद (ए.)। गुजरात टाइटंस ने सनराइजर्स हैदराबाद को आईपीएल 2025 के 51वें मैच में 38 रनों से हरा दिया है. इस जीत के साथ गुजरात ने 10 मैचों में 7 जीत के साथ 14 अंक लेकर प्वाइंट्स टेबल में दूसरे स्थान पर कब्जा कर लिया है. वहीं हैदराबाद की टीम आईपीएल 2025 के प्लेऑफ से लगभग बाहर हो गई है. एसआरएच 10 मैच के बाद 7 हार के बाद 6 अंकों के साथ 9वें स्थान पर मौजूद हैं।

इस मैच में सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस ने टॉस जीत और गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल को पहले बल्लेबाजी करने का न्योता दिया. गुजरात ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 224 रन बनाए. हैदराबाद जीत के लिए मिले 225 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट गंवाकर 186 रन ही बना पाई और 38 रनों से मैच हार गई।

गुजरात से जीत के लिए मिले 225 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए हैदराबाद के लिए सबसे ज्यादा रन अभिषेक शर्मा ने बनाए. उन्होंने 41 बॉल में 4 चौके और 6 छक्कों के साथ 74 रनों की पारी खेली. ट्रेविस हेड ने 20 और हेनरिक क्लासेन ने 23 रनों का योगदान दिया. ईशान किशन सिर्फ 13 रन बना पाए. इसके बाद कोई अन्य बल्लेबाज बड़ी पारी नहीं खेल पाया और टीम हार गई. गुजरात के लिए मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा ने 2-2 विकेट चटकाए जबकि इशांत शर्मा और गेराल्ड कोएट्जी को 1-1 विकेट मिला।

इससे पहले गुजरात टाइटंस के लिए शुभमन गिल और जोस बटलर ने शानदार अर्धशतकीय पारी खेली. गिल ने 38 बॉल में 10 चौके और 3 छक्कों के साथ 76 रनों की पारी खेली. बटलर ने 34 बॉल में 3 चौके और 4 छक्कों के साथ 64 रनों की पारी खेली. इन दोनों के अलावा साई सुदर्शन ने भी 23 बॉल में 48 रनों की पारी खेली. इस दौरान उन्होंने 9 चौके लगाए. उनके अलावा वाशिंगटन सुंदर ने 16 बॉल में 21 रनों का योगदान दिया. हैदराबाद के लिए जयदेव उनादकट ने सबसे ज्यादा 3 विकेट हासिल किए. पैट कमिंस और जीशान अंसारी ने 1-1 विकेट चटकाया।

साई सुदर्शन ने तोड़ा सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड, टी20 क्रिकेट में किया ये खास कारनामा

अहमदाबाद(ए)। गुजरात टाइटंस के सलामी बल्लेबाज साई सुदर्शन ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में शुक्रवार को सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ गुजरात के लिए खेलते हुए एक खास उपलब्धि हासिल की है. बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज ने अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में 32 रन पार करते ही यह उपलब्धि अपने नाम कर ली है।

इस उपलब्धि तक पहुंचकर वो 2000 टी20 रन बनाने वाले दूसरे सबसे तेज बल्लेबाज बन गए. सबसे कम पारियों में 2000 टी20 रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में शॉन मार्श सबसे ऊपर हैं. उन्होंने महज 53 पारियों में यह उपलब्धि हासिल की है. सुदर्शन ने 54 पारियों में यह उपलब्धि हासिल की और सबसे तेज 2000 टी20 रन बनाने का सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड तोड़ दिया.बता दें कि, 2011 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने वाले तेंदुलकर ने 2011 में 59 पारियों में यह उपलब्धि हासिल की थी. पिछले साल 23 वर्षीय सुदर्शन ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ आईपीएल मैच के दौरान अपनी 32वीं पारी में इस प्रारूप में 1000 रन बनाए थे. सुदर्शन देवदत्त पडिक्कल (25), रोहन कदम (27) और तेंदुलकर (31) के बाद ऐसा करने वाले तीसरे सबसे तेज भारतीय बल्लेबाज बन गए. तमिलनाडु के बल्लेबाज 1000 आईपीएल रन तक पहुंचने वाले सबसे तेज भारतीय बल्लेबाज भी बन गए थे, उन्होंने महज 25 पारियों में यह उपलब्धि हासिल की है।

टीम इंडिया द्विपक्षीय सीरीज के लिए नहीं जाएगी बांग्लादेश?

-पहलगाम आतंकी हमले के बाद मंडराए खतरे के बादल

नई दिल्ली,(ए.)। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम तीन वनडे और 3 टी20 मैचों की द्विपक्षीय सीरीज के लिए बांग्लादेश का दौरा वाली है लेकिन अब इस सीरीज पर खतरे के काले बादल मंडराते हुए नजर आ रहे हैं. भारतीय टीम के इस सीरीज के लिए बांग्लादेश जाने की संभावना नहीं है।

भारत सरकार के सूत्रों ने बताया कि दोनों देशों के बीच तनाव के कारण भारतीय क्रिकेट टीम के द्विपक्षीय सीरीज के लिए बांग्लादेश जाने की संभावना नहीं है. इस सीरीज के मैच ढाका में शेरे बांग्ला नेशनल स्टेडियम और चटगांव में बीर श्रेष्ठो फ्लाइट लेफ्टिनेंट मतिउर रहमान स्टेडियम खेले जाने वाले थे.पहलगाम आतंकी हमले के बाद एक सेवानिवृत्त बांग्लादेशी मेजर जनरल की टिप्पणी के कारण भारत और बांग्लादेश के बीच तनाव बढ़ गया है. रिपोर्टों के अनुसार, एएलएम फजलुर रहमान ने सुझाव दिया कि अगर बांग्लादेश पहलगाम आतंकी हमले के बदले में पाकिस्तान पर हमला करता है तो उसे भारत के सभी पूर्वोत्तर राज्यों पर आक्रमण कर कब्जा कर लेना चाहिए. इस हमले में 26 लोगों की जान चली गई थी.नेशनल इंडिपेंडेंट कमीशन के अध्यक्ष रहमान ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर बंगाली में लिखा, अगर भारत पाकिस्तान पर हमला करता है तो बांग्लादेश को पूर्वोत्तर भारत के सात राज्यों पर कब्जा करना होगा. इस संबंध में मुझे लगता है कि चीन के साथ संयुक्त सैन्य व्यवस्था पर चर्चा शुरू करना जरूरी है. एशिया कप 2025 भारत और बांग्लादेश के बीच सीरीज के समापन के बाद सितंबर में निर्धारित है. हालांकि पहलगाम आतंकी हमले के बाद इसके शेड्यूल को लेकर अनिश्चितता है क्योंकि दोनों देशों के बीच संबंध वर्तमान में आदर्श स्थिति में नहीं हैं।

नेमार का सैंटोस क्लब से कॉन्ट्रैक्ट अगले फीफा विश्व कप तक बढ़ाने की योजना

रियो डी जेनेरियो (ए)। ब्राजील के स्टार फुटबॉल नेमार का सैंटोस क्लब के साथ कॉन्ट्रैक्ट अगले साल होने वाले फीफा विश्व कप तक बढ़ाने का निर्णय लिया गया है, हालांकि वह वर्तमान में चोटों से जूझ रहे हैं। सैंटोस क्लब के प्रेसिडेंट मार्सेलो टक्सेइरा ने इस बारे में जानकारी दी। नेमार, जिन्होंने इस साल जनवरी में अपने बचपन के क्लब सैंटोस में वापसी की थी, पहले यूरोप और सऊदी अरब में खेल चुके हैं। उन्होंने सैंटोस के साथ छह महीने का कॉन्ट्रैक्ट साइन किया था। मार्सेलो टक्सेइरा ने कहा कि क्लब तकनीकी रूप से यह देख रहा है कि नेमार की रिकवरी को कैसे तेज किया जाए और उन्हें अगले विश्व कप तक टीम में बनाए रखने के लिए उनके कॉन्ट्रैक्ट को कैसे बढ़ाया जा सकता है। टक्सेइरा ने यह भी बताया कि क्लब ने नेमार की चोट को ध्यान में रखते हुए पूरी टीम और व्यवस्थाएं उन्हें पूरी तरह से ठीक होने के लिए उपलब्ध कराई हैं। वह अपने पुराने क्लब में वापस लौटकर खुश हैं, क्योंकि यह उनका घर है। नेमार पिछले साल अक्टूबर में घुटने की गंभीर चोट से उबरने के बाद से पैर की

मांसपेशियों की समस्याओं से परेशान रहे हैं। उन्होंने सैंटोस के लिए अब तक सिर्फ 9 मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 3 गोल किए और 3 असिस्ट दिए हैं। क्लब ने उन्हें पूरी सहायता देने का वादा किया है ताकि वह जल्द से जल्द फिट हो सकें। सैंटोस इस समय ब्राजील की सीरी ए लीग में 19वें स्थान पर है और उसने छह मैचों में सिर्फ चार अंक हासिल किए हैं। हाल ही में क्लब ने पूर्व राष्ट्रीय सहायक कोच क्लेबर जेवियर को नया कोच नियुक्त किया है। जेवियर ने अपनी पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि नेमार अब मिडफील्ड में खेलेंगे और उनके खेलने की शैली में बदलाव किया जाएगा।

जोस बटलर ने आईपीएल में रचा इतिहास, धोनी और वॉर्नर को छोड़ा पिछे

अहमदाबाद,(ए)। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान जोस बटलर ने अपने शानदार आईपीएल करियर में एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है. वो अब टूर्नामेंट के इतिहास में 4000 रन तक पहुंचने वाले दूसरे सबसे तेज बल्लेबाज बन गए हैं. उन्होंने ये उपलब्धि 2 मई को नरेंद्र मोदी स्टेडियम में गुजरात टाइटन्स की ओर से खेलते हुए सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मैच में हासिल की. बटलर ने मैच में 37 गेंदों में शानदार 67 रनों की पारी खेली, जिसमें 3 चौके और 4 छक्के शामिल थे.मैच से पहले बटलर को यह उपलब्धि हासिल करने के लिए सिर्फ 12 रनों की जरूरत थी, और जैसे ही उन्होंने 12 रन पुरे किए वैसे ही वो गेंदों का सामना करने के मामले में 4000 आईपीएल रन तक पहुंचने वाले दूसरे सबसे तेज बल्लेबाज बन गए. उनसे ऊपर केवल दो दिग्गज - क्रिस गेल और एबी डिविलियर्स से हैं. इन दोनों ने 2658 गेंदों में ये उपलब्धि हासिल की जबकि बटलर ने 2677 गेंदों में ये कारनामा अंजाम दिया. इस कारनामे के साथ ही बटलर ने सूर्यकुमार यादव, डेविड वॉर्नर, सुरेश रैना और एमएस धोना को पीछे छोड़ दिया है।

तीन बार हुई बिजली गुल

नर्मदापुरम(निप्र)। मौसम में हो रहे बदलाव के चलते सोमवार से मंगलवार तक जब बार बार तेज हवा चल रही थी तब भी बिजली जा रही थी। शुक्रवार को बादल ही थे हवा नहीं चली उसके बाद शनिवार को भी अचानक तीन बार बिजली गुल हुई। जब हवा बंद हुई तब कहीं बिजली का बार-बार आना जाना बंद हुआ। इस बार बिजली कंपनी की अन्य व्यस्तताओं के चलते बिजली कंपनी के द्वारा मेंटनेंस का कार्य कम ही किया गया है। इस कारण ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आने वाले बरसात के महिनों में बिजली परेशानी का कारण बनेगी।

खरीदी केंद्रों पर तुलाई, सिलाई में ढिलाई से कम हुई ढुलाई

-जिले के अनेक खरीदी केंद्रों पर लग रहा अंबार, मौसम बना हुआ है खराब
-अंतिम चरण में है उपार्जन, लक्ष्य से कम होगी गेहूं की खरीदी

नर्मदापुरम(निप्र)। जिले में समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी में तो तेजी आई थी। सभी खरीदी केंद्रों पर कुल खरीदी में से 60 प्रतिशत तक खरीदी हो चुकी है। लेकिन खरीदे गए गेहूं को बोरी में भरने तथा उसकी तुलाई करने के साथ ही बोरी की सिलाई ओर फिर ट्रक में भर कर उसकी संबंधित जगह तक ढुलाई में ढिलाई बरती जा रही है। इसी कारण अनेक केंद्रों पर अभी भी गेहूं के ढेर लगे हुए हैं। धीरे धीरे भुगतान की प्रक्रिया भी जारी है।

तुलाई में हो रही देरी

खरीदी केंद्रों पर गेहूं की ट्राली खाली होने के बाद उसकी तुलाई में ढिलाई के कारण परिवहन नहीं हो रहा है। प्रशासन ने अब फसलों के परिवहन पर जोर दिया है। त खरीदी केंद्र पर गेहूं परिवहन धीमी गति से

हो रहा है तुलाई भी धीरे धीरे हो रही है।

हर केंद्र पर पडा हुआ है गेहूं

चाहे मुख्यालय का मंडी का केंद्र हो या फिर किसी गांव में खेत में बने हुए खरीदी केंद्र हो सभी जगह पर क्विंटलों गेहूं पड़ा हुआ है। आवक अधिक और परिवहन कम होने के कारण सभी केंद्रों पर गेहूं का अंबार लगा है।

बिगड़ रहा मौसम का मिजाज

प्रदेश के अनेक जिलों में ओला पानी तथा गर्जना के साथ बारिश हो चुकी है। बीते तीन दिनों तक रूक रूक कर बारिश से उपज भींग गई हैं। इसके बाद भी समीक्षा करने वाले प्रशासन ने गेहूं खरीदी के कार्य में तुलाई, उसकी सिलाई और फिर उसकी ढुलाई अर्थात परिवहन की ओर ध्यान नहीं दिया जो खरीदा हुआ गेहूं भींग कर खराब हो रहा है।

अंतिम चरण में खरीदी

अब गेहूं की समर्थन मूल्य पर खरीदी अंतिम चरण में है। इस बार मौसम ठीक रहने से गेहूं का दाना अच्छा है। इस कारण किसानों से व्यापारियों ने सीधी खरीदी कर ली है।

इस कारण भी खरीदी केंद्रों पर किसानों की संख्या कम रही। पूर्व के वर्ष की तरह ही इस बार भी लक्ष्य से कम गेहूं की खरीदी होगी।

नपा ने तीसरे दिन बसंत टाकीज क्षेत्र के नाले में की साफ सफाई

मलवा के साथ निकाला कचरा, अतिक्रमण दल ने हटाया अतिक्रमण

नर्मदापुरम् (निप्र)। बारिश पूर्व नगर के बड़े नाले नालियों से अतिक्रमण हटाकर नगरपालिका द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। शनिवार को भी लेंडिया बाजारए बसंत टाकीज के पास नाला और उससे जुड़े सभी बड़े नाले नालियों को जेसीबी की मदद से सफाई कराई जा रही है। जिसमें पालिथिन प्लास्टिक की बोतलें ईट पत्थर के टुकड़े भारी मात्रा में निकलें। नगरपालिका का उक्त अभियान लगातार जारी रहेगा।

नाले से निकाला मलवा

स्वच्छता उपनिरीक्षक संजय लुटारे ने बताया कि नगरपालिका अध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव एवं मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले के निर्देश पर नगर में युद्ध स्तर पर सफाई अभियान चलाया जा रहा है। शनिवार तीसरे दिन बसंत टाकीज के पास स्थित लेंडिया नाले की सफाई की गई है। जिसमें भारी मात्रा में कचरा निकाला गया है। नाले में पालिथिनए प्लास्टिक की बाटल के साथ गाद भी निकालकर जल निकासी सुचारू की गई है। सफाई अभियान के दौरान सहयोगी रामसिंह भी उपस्थित रहे। यह अभियान लगातार जारी रहेगा।

हटाया जा रहा है अतिक्रमण

अतिक्रमण दल प्रभारी सुनील राजपूत ने बताया कि नपाध्यक्ष और मुख्य नगरपालिका के निर्देशों के पालन में नगर के बड़े नाले नालियों पर हुए अतिक्रमण को सख्ती से हटाया जा रहा है। साथ ही अतिक्रमणकारियों को हिदायत दी जा रही है कि आप अपने अतिक्रमण स्वयं हटा लें अन्यथा नगरपालिका की टीम हटाएगी तो समूची जिम्मेदारी आपकी होगी। सभी से आग्रह है कि नाले नालियों पर से अतिक्रमण हटाने में नगरपालिका का सहयोग करें।

स्वच्छता अभियान जारी रहेगा

बारिश पूर्व नगरहित में सफाई कार्य कराया जा रहा है। नगर के समस्त नागरिकगणोंए व्यापारीगणों से आग्रह है कि इस अभियान में सहयोग कर नगर को साफ स्वच्छ और सुंदर बनाने में सहयोग करें। नगरपालिका का यह अभियान लगातार जारी रहेगा। नाले नालियों से अतिक्रमण हटा लें जिससे कि स्वच्छता टीम को सफाई करने में किसी प्रकार की बाधा न आए। आप सभी से आग्रह है कि कचरा इधर उधर न फैंकें। इससे न केवल गंदगी फैलती है बल्कि आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भी होता है। घरों दुकानों और प्रतिष्ठानों में डस्टबिन अवश्य रखें और कचरा वाहन आने पर कचरा उसी में डालें।

नीतू महेंद्र यादव
नपाध्यक्ष नर्मदापुरम्

भाजपा नगर मंडल पुरानी इटारसी ने टीआई को सौंपा ज्ञापन

कहा आजाद चौक पर रेत के डंपर शाम के समय आने से रोंके , नया यार्ड क्षेत्र में पुलिस की पेट्रोलिंग बढाई जाए

इटारसी (निप्र)। भारतीय जनता पार्टी नगर मंडल पुरानी इटारसी के पदाधिकारियों ने मंडल अध्यक्ष मयंक मेहतो के नेतृत्व में सिटी थाना पहुंचकर पुलिस अधीक्षक के नाम टीआई गौरव सिंह बुंदेला को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के जरिए कहा गया कि पुरानी इटारसी में आजाद चौक से रोजाना शाम 5 बजे के बाद रेत के डंपर बडी संख्या में स्पीड से निकलते हैं जिससे यहां 30 मिनिट से लेकर 1 घंटे तक जाम लग जाता है जिससे शहर के आम जन को दिक्कत का सामना करना पड़ता है रेत के डंपर यहां से हरदा के लिए निकलते हैं। इनका आवागमन शाम के वक्त से रोककर रात 10 बजे के बाद किया जाए। इसके अलावा इन डंपरों के हेडलाइट भी जांची जाए। क्योंकि इनके सफेद वाले लाइट इतने तेज रोशनी देते हैं कि सामने से आने वाले वाहन चालक को कुछ नहीं दिखता जिससे दुर्घटनाएं हो रही हैं। बही मंडल के अंतर्गतनया यार्ड क्षेत्र साई कालोनी में लगातार आपराधिक वारदातें को रोकने के लिए यहां पुलिस पेट्रोलिंग लगाए जाने के संबंध में बात हुई। टीआई गौरव सिंह बुंदेला ने कहा कि दोनों विषयों का गंभीरता से निराकरण किया जाएगा। ज्ञापन सौंपते समय मंडल अध्यक्ष मयंक मेहतो के अलावा पार्षद जिमी कैथवास कुंदन गौरमहामंत्री प्रियंका बसंत चौहान अतुल शुक्ला मंडल प्रतिनिधि डॉ पीएम पहाडिया अवध नारायण पाण्डेय प्रकाश केवट जय प्रकाश सचान उपाध्यक्ष गोविंद मेहतो वीरेंद्र यादव सौरभ राजपूत विपुल चौधरी विजय भंगाले मंत्री जितेंद्र मालवीय इंद्रजीत मालदार जयदीप प्रजापति मनीष गालर रौनक मालवीय युवा मोर्चा अध्यक्ष सौरभ चौधरी युवा मोर्चा उपाध्यक्ष अंशु यादव शंशाक मालवीय अनिल तिवारी अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष नफीस अहमद सिद्धीकी महिला मोर्चा महामंत्री राजकली बाबरिया भवानी शंकर दुबे रौनक मालवीय राजेश चौहान सोहनलाल बाबरिया विशाल जायसवार बिटटू पासी अंकित मेहतो सुधीर बाजपेयी कार्तिक चौहान शेर सिंह बैस हेमंत कुमार सहित अन्य मौजूद थे।

सफलता की कहानी

प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना बनी किसानों के लिए वरदान

ग्राम रेहड़ा के कृषक सेवाराम कहार ने ड्रिप इरिगेशन सिस्टम से सिंचाई समस्या का किया समाधान

नर्मदापुरम (निप्र)। प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY) का उद्देश्य देश के किसानों को आधुनिक एवं जल- सिंचाई तकनीकों से जोड़ना है, जिससे हर खेत को पानी का संकल्प पूरा हो सके। इस योजना के अंतर्गत सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली जैसे ड्रिप एवं स्प्रिंकलर इरिगेशन को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे पानी की बचत के साथ-साथ फसलों की उत्पादकता में भी वृद्धि हो रही है। इसी योजना का लाभ उठाते हुए ग्राम रेहड़ा, तहसील सिवनी मालवा, जिला नर्मदापुरम के कृषक सेवाराम कहार ने ड्रिप इरिगेशन सिस्टम को अपनाया है। पूर्व में सिंचाई की समस्या से जूझ रहे श्री कहार ने योजना के अंतर्गत अनुदान प्राप्त कर ड्रिप इरिगेशन प्रणाली स्थापित की, जिससे अब उन्हें अपने खेतों की सिंचाई सुलभ एवं सुचारू रूप से करने में सफलता मिली है। श्री कहार बताते हैं कि ड्रिप इरिगेशन से न केवल सिंचाई की सुविधा आसान हुई है, बल्कि पानी की भी पर्याप्त बचत हो रही है। वे इस तकनीक से पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं और अन्य किसानों को भी इस योजना का लाभ उठाने की सलाह देते हैं। प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना के माध्यम से देशभर के लाखों किसानों को लाभ मिल रहा है और यह प्रयास कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक मजबूत कदम साबित हो रहा है।

सफलता की कहानी

सुपर सीडर तकनीक के रूप में नरवाई प्रबंधन के लिए मिला आसान और असरदार विकल्प

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम जिले की इटारसी तहसील के ग्राम जमानी के प्रगतिशील किसान हेमंत दुबे ने फसल अवशेष प्रबंधन एवं समय पर बोवनी की दिशा में अनुकरणीय पहल करते हुए आधुनिक कृषि तकनीक सुपर सीडर मशीन का सफलतापूर्वक उपयोग किया है। सुपर सीडर एक अत्याधुनिक कृषि यंत्र है जो फसल कटाई के बाद खेत में बचे फसल अवशेषों (नरवाई) को मिट्टी में मिलाते हुए अगली फसल की बोवनी करने में सक्षम है। श्री दुबे ने बताया कि पहले नरवाई के कारण अगली फसल की समय पर बुवाई संभव नहीं हो पाती थी और खेत तैयार करने में अत्यधिक समय व श्रम लगता था।

लेकिन अब सुपर सीडर की मदद से फसल कटाई के दो दिन बाद ही खेत अगली फसल के लिए तैयार हो जाता है। साथ ही पूर्व फसल के अवशेष मिट्टी में मिलकर जैविक उर्वरक का कार्य करते हैं जिससे भूमि की उर्वरता में वृद्धि होती है। उन्होंने यह भी कहा कि फसल अवशेष जलाने से न केवल मिट्टी की सेहत खराब होती है, बल्कि वायु प्रदूषण और मानव स्वास्थ्य पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सुपर सीडर के उपयोग से इन समस्याओं से भी निजात मिलती है।

श्री दुबे ने कृषि विभाग का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि विभाग को धन्यवाद जिन्होंने इस तकनीक के बारे में अवगत कराया साथ ही मुझे नैतिक समर्थन भी दिया कि मैं इस तकनीक का इस्तेमाल अपने खेतों में कर पाऊं। हेमंत दुबे ने अन्य किसानों से भी अपील की है कि वे इस तकनीक को अपनाकर न केवल अपने खेतों की उर्वरता बढ़ाएं बल्कि पर्यावरण की रक्षा करते हुए खेती को एक लाभकारी व्यवसाय बनाएं।

जिले की केन्द्रीय जेल एवं उप जेल में निरुद्ध बंदियों के लिए विधिक सहायता सह विशेष स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का हुआ आयोजन

नर्मदापुरम (निप्र)।म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार दिनांक को प्रभारी प्रधान जिला न्यायाधीश मनोज कुमार के मार्गदर्शन में एवं न्यायाधीश/सचिव श्रीमान विजय कुमार पाठक के निर्देशन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जेल एवं स्वास्थ्य विभाग के साथ संयुक्त तत्वाधान में केंद्रीय जेल नर्मदापुरम में विधिक सहायता एवं विशेष स्वास्थ्य परीक्षण शिविर एवं विधिक सहायता जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। उक्त विधिक सहायता सह विशेष स्वास्थ्य परीक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ न्यायमूर्ति श्री सुरेश कुमार कैत . मुख्य न्यायाधीश म.प्र. उच्च न्यायालय जबलपुर, न्यायमूर्ति श्री संजीव सचदेवा, कार्यपालक अध्यक्ष, म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर, न्यायमूर्ति श्री अतुल श्रीधरन म.प्र. उच्च न्यायालय एवं न्यायमूर्ति श्री विवेक अग्रवाल अध्यक्ष, उच्च न्यायालय विधिक सेवा समिति जबलपुर द्वारा केन्द्रीय जेल जबलपुर से किया गया।उक्त शुभारंभ कार्यक में समापन उपरांत केन्द्रीय जेल नर्मदापुरम में प्रभारी प्रधान जिला एवं सेशन न्यायाधीश श्री मनोज कुमार द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई।उक्त शिविर में उपस्थित बंदियों को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नर्मदापुरम के सचिव विजय कुमार पाठक द्वारा बंदियों के कानूनी अधिकार, नि:शुल्क विधिक सहायता, प्ली बारगेनिंग प्रक्रिया के माध्यम से प्रकरणों के निराकरण कराये जाने के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई। सचिव श्री पाठक द्वारा यह भी जानकारी दी गई की जेल में निरुद्ध बंदियों को किसी भी प्रकार की विधिक सहायता की आवश्यकता हो तो वह जेल में स्थापित लीगल एड क्लीनिक में सम्पर्क कर अपनी समस्याओं का निराकरण करा सकते है।प्रभारी प्रधान जिला एवं सेशन न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा केन्द्रीय जेल, जेल लीगल एड क्लीनिक, महिला एवं पुरुष बंदियों हेतु तैयार किये गये बैरकों, एवं का निरीक्षण किया गया।उक्त विशेष स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में जिला चिकित्सालय के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा 501 पुरुष बंदियों एवं 57 महिला बंदियों एवं उनके साथ रह रहे 03 बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया एवं आवश्यक जांच जैसे, बी.पी., शुगर, आंखों की जांच की गई एवं ब्लड सेंपल भी लिये गये। तथा आवश्यकतानुसार बंदियों को दवा वितरित की गई, शिविर में बंदियों के रक्तचाप, शुगर, टी.वी., आदि की जांच की गई। विशेष स्वास्थ्य शिविर में, जिला चिकित्सालय से डॉ. रवीन्द्र गंगराड़े सर्जिकल विशेषज्ञ, डॉ डी.सी. सिंगार नेत्ररोग विशेषज्ञ, डॉ अनिल बहुके अस्थि रोग विशेषज्ञ, डॉ. कार्तिक कुमार अहिरवार मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. कु. नाजिया सिद्धकी क्लीनिकल साइक्लोजिस्ट डॉ. सृजन सिंह सेंगर मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉ. मिलन सोनी दन्त रोग विशेषज्ञ डॉ. भास्कर गुप्ता शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ शिल्पा राजपूत डी.आर.पी.ई.एन.टी. डॉ. नमिता श्रीवास फार्मासिस्ट डॉ. रिचा पहारिया स्त्री रोग विशेषज्ञ द्वारा केन्द्रीय जेल खण्ड अ एवं ब निरुद्ध महिला एवं पुरूष बंदियो व महिला बंदियो के साथ रह रहे बच्चों का स्वास्थय परीक्षण किया गया।

उक्त विधिक सहायता एवं स्वास्थ शिविर में उपस्थित बंदियो को लीगल एड डिफेंस काउंसिल के चीफ सतीश तिवारी डिप्टी चीफ पंकज तिवारी, असिस्टेंट श्रीमति पूजा अवस्थी द्वारा विधिक सहायता एवं सलाह प्रदान की गई। साथ ही बंदियो को उनके प्रकरणों से संबधित जानकारियां प्रदान की गई।उक्त विधिक सहायता एवं स्वास्थ शिविर में प्रभारी प्रधान जिला एवं सेशन न्यायाधीश श्री मनोज कुमार सीनियर, सचिव विजय कुमार पाठक, अभय सिंह, जिला विधिक सहायता अधिकारी, जेल अधीक्षक संतोष सिंह सोलंकी, उप जेल अधीक्षक प्रहलाद सिंह बरकड़े, सहायक जेल अधीक्षक रितुराज दांगी, जेलर हितेश बंडिया, जेल पैरालीगल वालेंटियर एवं जेल, स्वास्थ्य विभाग एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नर्मदापुरम् के कर्मचारीगण उपस्थित रहें।

05 मई गेहूँ उपार्जन की अंतिम तिथि

स्लॉट बुकिंग के लिए शेष किसान जिला खाद्य कार्यालय में आवेदन देकर स्लॉट बुक करवा सकते है

नर्मदापुरम (निप्र)। रबी विपणन वर्ष 2025 - 26 में जिले में गेहूँ उपार्जन हेतु 64988 किसानों द्वारा पंजीयन कराया गया है। जिले में गेहूँ उपार्जन हेतु कुल 171 गेहूँ उपार्जन केन्द्र स्थापित किये गये है। उक्त गेहूँ उपार्जन केन्द्रों पर उपार्जन का कार्य दिनांक शासन के निर्देशानुसार 15.03.2025 से 05.05.2025 तक किया जा रहा है। जिला आपूर्ति अधिकारी श्रीमती रश्मि साहू ने बताया कि आज दिनांक तक की स्थिति में जिले में कुल पंजीकृत किसानों मे से 41791 किसानों द्वारा स्लॉट बुकिंग किये गये है जिनमें से 33844 किसानों द्वारा उपार्जन केन्द्र पर अपनी उपज का विक्रय किया जा चुका है उक्त किसानों से 361951 में.टन गेहूँ का उपार्जन किया गया है।नागरिक आपूर्ति निगम स्तर से 336706 में.टन के स्वीकृति पत्रक जारी किये गये है। स्वीकृत मात्रा के विरुद्ध 740.04 करोड़ रुपये का सफल भुगतान जे.आई.टी. के माध्यम से विक्रेता किसानों को किया जा चुका है। शासन द्वारा स्लॉट बुकिंग की अंतिम 30.04.2025 तक निर्धारित की गई थी। किन्तु इसके उपरान्त भी यदि ई उपार्जन पोर्टल पर पंजीकृत किसानों में से समर्थन मूल्य पर गेहूँ विक्रय करने हेतु इच्छुक किसान जो स्लॉट बुक नहीं करा सकें है वे दिनांक 05.05.2025 तक स्लॉट बुकिंग हेतु कलेक्टर कार्यालय (खाद्य शाखा) में अपना आवेदन प्रस्तुत कर सकते है। प्रस्तुत आवेदन में कृषक का नाम, किसान कोड, विक्रय की जाने वाली उपज की मात्रा, उपज विक्रय करने हेतु चयनित उपार्जन केन्द्र का कोड तथा विक्रय की दिनांक (अधिकतम 05.05.2025 तक) का उल्लेख करना होगा। अत: उक्त संबंध में शेष कृषकों भाईयों से निवेदन है कि वे गेहूं उपार्जन की अंतिम 05.05.2025 तक अनिवार्यत: संबंधित उपार्जन केन्द्र पर अपनी उपज लेकर पहुंच जाए।

बिजली कार्मिक 24×7फोन पर हैं उपलब्ध

हरदा (आरएनएस)। आँधी, बारिश के दौरान एवं अन्य व्यवधान के कारण हुए बिजली फॉल्ट की शिकायतें दर्ज कराने के लिए मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा उपभोक्ताओं को अनेक विकल्प प्रदान किये गये हैं। अब उपभोक्ताओं के पास विद्युत व्यवधान संबंधी शिकायतों को दर्ज करने के लिए कॉल सेन्टर के टोल फ्री नंबर 1912, व्हाट्सऐप नंबर 0755-2551222, मोबाइल ऐप 'उपाय अथवा कंपनी की वेब साइट portal.mpcz.in का विकल्प मौजूद है। उपभोक्ता इन विकल्पों में से किसी भी एक विकल्प का उपयोग कर अपनी विद्युत व्यवधान संबंधी शिकायतें दर्ज कर आसानी से निराकरण करा सकते हैं।कंपनी ने कहा है कि उपभोक्ता शिकायत दर्ज करने के लिए अपने मोबाइल में कंपनी के व्हाटसऐप नंबर 07552551222 को सेव कर मैसेज Hi लिखकर भेजें एवं आगामी संदेशों का पालन करें। इसी प्रकार प्ले स्टोर के माध्यम से उपाय ऐप को डाउनलोड कर एवं उसके उपयोग से भी अपनी शिकायत आसानी से दर्ज करा सकते है।

योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए करें बेहतर प्रबंधन, नागरिकों को सुशासन का लाभ दिलाए - मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव

मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने समाधान ऑनलाइन में नर्मदा पुरम एवं बैतूल के आवेदकों से रुबरु बात कर उनकी समस्या के समाधान की स्थिति की जानकारी ली

नर्मदापुरम(निप्र)। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने कहा कि जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरना ही सुशासन है इसलिए प्रदेश के हर नागरिक को सुशासन का लाभ दिलाया जाना सुनिश्चित करें। स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ बेहतर संवाद स्थापित करें और उनके सुझावों पर भी अमल करें। हर संभव तरीके से अपनी दक्षता और क्षमता बढ़ाए। जिले में चल रही सभी प्रकार की घटनाओं पर पैनी नजर रखें। योजनाओं का समय सीमा में क्रियान्वयन सुनिश्चित करें। इसके लिए बेहतर प्रबंधन करें। मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने समाधान ऑनलाइन कार्यक्रम में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रदेश के सभी कलेक्टर्स को यह निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव समत्व भवन मुख्यमंत्री निवास से समाधान ऑनलाइन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने समाधान ऑनलाइन में आए प्रदेश के 14 जिलों के विभिन्न प्रकरण की सीधी सुनवाई की

और आवेदकों से रूबरू उनके मामले के निराकरण की स्थिति की जानकारी ली। मुख्यमंत्री समाधान ऑनलाइन कार्यक्रम में नर्मदापुरम एवं बैतूल जिले के एक-एक आवेदकों से मुख्यमंत्री ने रूबरू चर्चा कर उनकी शिकायत के समाधान की स्थिति की जानकारी ली।मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि सभी कलेक्टर्स सरकार की योजनाओं के डिलीवरी सिस्टम के मजबूती के लिए प्रयास करें। नागरिकों के काम समय पर हो और उन्हें अपनी छोटी-छोटी जरूरत के लिए यहां वहां भटकना न पड़े, यह सुनिश्चित किया जाए।मुख्यमंत्री समाधान ऑनलाइन कार्यक्रम में मुख्य सचिव अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव डॉक्टर राजेश राजौरा, अपर मुख्य सचिव ग्रह जेएन कंसोटिया, पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाना सहित सभी अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव एवं सचिव उपस्थित थे।मुख्यमंत्री डॉक्टर यादव ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन में प्राप्त होने वाली सभी आवेदकों का तय समय सीमा में ही निराकरण किया जाए यदि कोई मसला समाधान ऑनलाइन में आ रहा है तो यह गंभीर है। सुशासन के तहत स्थानीय स्तर पर ही आवेदक को उनकी समस्या का निदान मिल जाए यह सुनिश्चित किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक एव ब्यूरों प्रमुख श्री कृष्णकांत सक्सेना की ओर से श्री बालाजी प्रिटंर्स, प्लाट नं. 21, सेक्टर-एच, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा भोपाल से मुद्रित तथा ''शिवरानी भवन'', क्षितिज किरण स्ट्रीट, कोठी बाजार, नर्मदापुरम (होशंगाबाद) से प्रकाशित।
स्थानीय ब्यूरों प्रमुख श्री बलराम शर्मा सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। मो. 9425025999 (नर्मदापुरम मो. 9926434695) ई-मेल - dainikkshitijkiran@gmail.com, वेबसाइट- www.kshitijkiran.com